॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

दिसम्बर, 2014 वर्ष 17, अंक 12 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2071 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 24

समर्पित सिपाही-स्वामी श्रद्धानन्द

❒ राज करनी अरोड़ा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की गणना उन महापुरुषों में होती है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने में अपना सर्वस्व होम कर दिया, सिरधड़ की बाजी लगा दी। दयानन्द के मानसपुत्र, अग्नि-पुरुष, शान्त ज्वालामुखी, क्रान्तिकारी संन्यासी, विद्रोही सन्त, अछूतोद्धारक, स्त्री शिक्षा के प्रचारक, प्रखर राष्ट्रवादी, विद्वान, योगी, वीतराग संन्यासी, प्रचण्डयोद्धा, अनुभवी नेता, बहुमुखी प्रतिमा के धनी, सत्यनिष्ठ, ईश्वर विश्वासी, निर्भीक, स्वाभिमानी, आदर्श, आचार्य, छात्रवत्सल, एकता के सूत्रधार, दृढ़ सिद्धान्तवादी, सर्वस्व समर्पणकर्ता स्वामी श्रद्धानन्द धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर थे वे मनुजता का मान, ऋषियों की आन, शूरता की शान और भारत भू का अभिमान थे। स्वाधीनचेता अमर बलिदानी, त्यागी, तपस्वी, युग-पुरुष, अग्रणी नेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा और स्वतन्त्रता सेनानी अमर बलिदानी थे उनकी जीवन गाथा जितनी रोचक है, उतनी ही रोमांचक भी है। इनका जन्म फरवरी 1856 में एक प्रसिद्ध, सम्पन्न ईश्वर परायण खत्री घराने में श्री नानक चन्द के घर हुआ। जन्म का नाम बृहस्पति था, बाद में मुंशीराम के नाम से पुकारा गया। अन्तिम और छठी सन्तान होने के कारण बचपन खूब लाड प्यार में बीता। यज्ञोपवीतोपरान्त प्रारम्भिक शिक्षा बनारस में हुई। पुलिस इन्सपैक्टर पिता के बार-बार स्थानान्तारण के कारण नियमित और व्यवस्थित रूप से शिक्षा न चल पाई, क्वीन्स कॉलिज में एंट्रेस करने के उपरान्त इलाहाबाद में मेयोकॉलिज में प्रवेश लिया। यही पं. मोतीलाल नेहरू से मित्रता हुई। बनारस में ही इनके अन्दर रागात्मक वृत्तियों और कलात्मक अभिरूचियों का विकास हो चुका था। साहित्यिक अध्ययन भी खूब किया। लाहौर में वकालत की अन्तिम परीक्षा पास की। 21 वर्ष की आयु में प्रसिद्ध रईस और साहूकार राय सालिग्राम की सुपुत्री श्रीमती शिवदेवी से विवाह हुआ। 1891 में यह देवी स्वर्ग सिधार गई और इस प्रकार केवल 35 वर्ष की आयु में ही मुंशीराम पर पारिवारिक संकट आ पड़ा। दो पुत्र और दो पुत्रियों के पिता मुंशीराम पर मां का भी उत्तरदायित्व आ पड़ा। युवावस्था, धनदौलत-ऐश्वर्य सब कुछ होते हुए भी इन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। तप-त्याग-पूर्वक छोटे-छोटे बच्चों का पालन किया, उन्हें मातृस्नेह भी दिया और पिता का संरक्षण-परिपालन भी। इसी त्याग-तपस्या ने इन्हें आगे चलकर गुरुकुल का स्नेहिल सफल आचार्य, अधिष्ठाता और कुलपति भी बना दिया।

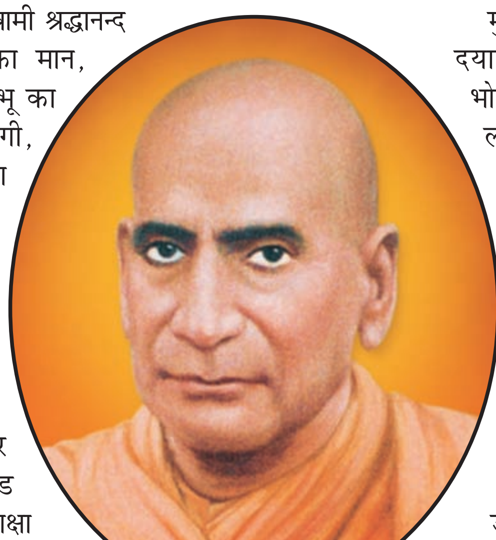

मुन्शीराम की जीवन-गाथा प्रमाण है कैसे महर्षि दयानन्द के स्निग्ध सान्निध्य रूपी पारस ने भोग-विलास में लिप्त उच्छृखल मुन्शीराम रूपी लोहे को स्वर्ण बना दिया। जिस महर्षि के एक वाक्य ने अमीचन्द को हीरा बना दिया, उनके एक साक्षात्कार ने पुलसिया सिपाही लेखराम को सन्त रक्त साक्षी आर्यवीर मुसाफिर अमर शहीद बना दिया, एक धैर्य युक्त मुस्कराते मुख की झलक ने नास्तिक गुरुदत्त को ईश्वर भक्त आस्तिक बना दिया, उसी तरह बरेली में सन् 1879 में पधारे स्वामी दयानन्द के प्रवचनों ने मुंशीराम को महात्मा मुन्शीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। सभी शंकाओं का उच्छेदन हो गया, सभी दुर्गुण दुर्व्यसनों का खात्मा हो गया। ''सत्यार्थ प्रकाश'' के अध्यपनानुशील ने जीवन का कायाकल्प कर दिया। लाहौर में बच्छोवाली आर्य समाज में प्रवेश एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया। समाज के प्रधाना ला. साईदास के शब्दों में इस नई स्पिरट ने वैदिक सिद्धान्तों की धूम मचा दी। उत्सव, अधिवेशन, जल से, जुलूस, प्रवचन, उपदेश, वेद-कथा, शास्त्रार्थ ने पंजाब और पंजाब से बाहर की आर्य समाज की धाक जमा दी। समाज में फैली कुरीतियां-बाल-विवाह, विधवा-विवाह-निषेध, जाति-पाति, अस्पृश्यता, नारी, अशिक्षा, पर्दा-प्रथा

(शेष पृष्ठ 21 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Now India needs next level of

'Independence'-mentally, physically and socially !

The first war of Independence started in 1857, went on for nearly nine decades as an incessant fight and ended on August 15, 1947, when our country gained freedom from the British Raj. We have come a long way since then. It has been 67 years. There is no doubt that we have made progress in numerous areas but we still need to excel in others. Despite the tough past, I hope and believe that with bright young minds like you, what awaits us is nothing less than a glorious future.

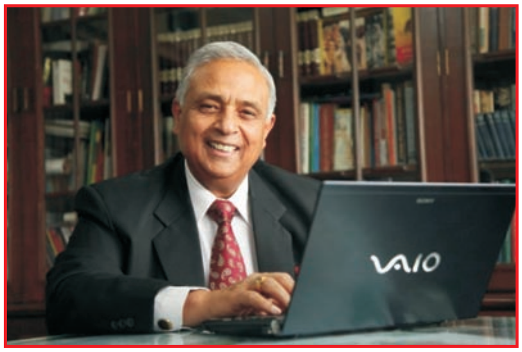

"We must realise that the real freedom is when we are free from the limitations created within our minds."

Going forward, we all must become conscious of the fact that for growth, evolution is a pre-condition and therefore, our independence also must evolve.

Keeping in mind the legacy left by our beacon-Swami Dayanand, who gave the first call for "Swarajya"-India for Indians, which later also became the foundation for the entire freedom movement. We must realise that the real freedom is when we are free from the limitations created within our minds, when we can think beyond the barriers of physical nature and at the same time, we all are free from the social restrictions. It is evident that Swamiji and his teachings could free India from social evils like Sati and Untouchability. He emancipated us from political, cultural and religious domination.

Even the word 'revolution' finds its roots in evolution. It is a continuous process. We need to evolve and consequently become independent of every restraint which is preventing us from exploring our true selves.

In over 127 years of its existence, DAV has evolved to mirror the needs of the modern age, being rooted to traditions at the same time. Due to the sacrifices of brave-hearts, like Shaheed Bhagat Singh and Lala Lajpat Rai, alumni of D.A.V., we now are able to live our lives free from any kind of physical bondage. Today, we may not be under the British rule but we could be imprisoned in our own fears, worries, anxieties and other inhibitions. Let us pledge to free ourselves from every such limitations-be it physical, mental or social.

DAV United is another dimension in the evolution of DAV. Let us all welcome the future with open arms, taking lessons from the past and celebrating every achievement that has been and is coming our way.

Let us not waste or misuse what has been bestowed to us after so many sacrifices and hardships. Value the freedom we have and attach our actions to responsibility. This sense of realisation, of being dutiful, respectful and responsible, is an integral part of our evolution as ideal citizens. We owe it to our nations, to our society and to ourselves.

With every edition, comes a thrill to see how well our community is doing. May our every move lead us to the freedom we all want and deserve! Wishing all of you a great 68th Independent year ahead! Be free, be responsible, be a true DAVian! **Punam Suri,** President, DAVCMC

–साभार डी.ए.वी. यूनाईटेड पत्रिका

यह पत्रिका डी.ए.वी. के पढ़े पुराने एवम् वर्तमान विद्यार्थियों की एक पत्रिका हैं। अधिक जानकारी के लिए www.facebook/davunited पर लॉग इन करें।

अखिल भारतीय महात्मा हंसराज दिवस पर

आदरणीय श्री रामनाथ सहगल जी आजीवन उपलब्धि-सम्मान से सम्मानित

(Life Time Achievement Award)

रामनाथ आर्य समाज का हीरा है (स्व. महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा कथित)

15 नवम्बर 2014 को महात्मा हंसराज दिवस डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद के 10 एकड़ खुले मैदान में आयोजित किया गया, जिसमें सम्पूर्ण भारत से डी.ए.वी. परिवार के असंख्य प्रधानाचार्य, आचार्य, क्षेत्रीय प्रबंधक एवम् अन्य अधिकारीगण उपस्थित हुए। प्रत्यक्षदर्शी पत्रकारों के अनुसार लगभग 5000 व्यक्तियों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें उपरोक्त सम्मान से डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल को जीवन पर्यन्त आर्य समाज एवम् डी.ए.वी. आन्दोलन में अभूतपूर्व सेवाओं एवम् योगदान हेतु सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता डी.ए.वी. एवम् प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी द्वारा की गई। और उन्हीं के कर कमलों द्वारा उपरोक्त सम्मान दिया गया। (उत्सव की विस्तृत जानकारी अगले अंक में दी जाएगी)

आदरणीय सहगल जी सम्मान पत्र एवम् शाल उढ़ाकर सम्मानित करते आर्य पुत्र श्री पूनम सूरी जी, प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा। साथ में मन्त्री श्री राधेश्याम शर्मा, सचिव डी.ए.वी. एवम् श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री प्रादेशिक सभा।

सहगल जी को सहसम्मान मंच पर ले जाते श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री प्रादेशिक सभा एवम् श्रीमती निशा पशीन, मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा उपसभा, दिल्ली एवम् निर्देशक डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स, श्री एस.के.शर्मा निर्देशक डी.ए.वी. कॉलेज्स मंच पर स्वागत करते।

प्रधानाचार्य एवम् स्थानीय निर्देशक डॉ. वी. सिंह के साथ सहगल जी, इसी अवसर पर आर्य जगत साप्ताहिक के विशेष अंक का विमोचन भी हुआ।

श्री रामनाथ सहगल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

आपका जन्म 13 मार्च, 1925 को सरगोघा जिले में (राजियावाला) भैरा ग्राम के आर्य परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा गांव के ही एक एंग्लो, संस्कृत विद्यालय में हुई। दसवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के बाद आपको पंजाब नेशनल बैंक, रावलपिंडी में नौकरी मिली, वहां आप आर्य समाज में अग्रणी श्रीपिशोरीलाल जी के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से आपने आर्यसमाज मंदिर में जाना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही आप आर्यवीर दल के नगर नायक बन गये, आर्यवीर दल के माध्यम से सेवाकार्य और युवकों को राष्ट्रभक्ति सिखाने हेतु जगह-जगह पर अनेक शिविरों का संचालन किया। आपको सर्वप्रथम, गुरुकुल रावल के शिविर में स्वामी आत्मानन्दजी ने शिविर का संयोजक बनाया। उसके बाद आज पर्यन्त आर्यवीर दल, आर्यसमाज, प्रान्तीय, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन या शताब्दी महोत्सव सभी आयोजनों में आपको संयोजक बनाया जाता है और आप दिन-रात कड़ी मेहनत कर प्रत्येक समारोह को ऐतिहासिक रूप प्रदान कर देते है।

देश जब विभाजन की ओर जा रहा था और स्थान-स्थान पर हिंदु-मुस्लिम दंगे हो रहे थे, तब आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के विद्वान प्रचारक, महात्मा खुशहालचन्दजी ने हिन्दुओं की रक्षा और सेवा करने हेतु रावलपिंडी में एक राहत शिविर लगाया और आपको उसका संयोजक बनाया। बैंक में कार्यरत होते हुए भी आपने उस जिम्मेवारी को स्वीकार किया और अपार निष्ठा एवं श्रद्धा से उसका निर्वहन करते हुए आप अधिकतम समय शिविर में रहकर सेवाकार्य करते रहे। उस शिविर में हिन्दु महासभा के कैप्टन केशवचन्द्र सहायता कार्य के लिए पधारे तो उन्होंने आपकी कड़ी मेहनत, निष्ठा, लगन और सेवाभाव को देखा। संयोगवश कैप्टन केशवचन्द्र उस समय पंजाब नेशनल बैंक के निर्देशक थे, उन्होंने बैंक को आपके कार्य के बारे में लिखा, जिससे प्रभावित होकर आपको एक माह का वेतन बैंक द्वारा पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया। आपका यह प्रथम पुरस्कार था।

आपका समस्त जीवन आर्यसमाज को समर्पित रहा है। आप डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान हैं और साथ ही अनेक गुरुकुलों का संचालन भी करते हैं। आर्यसमाज की विभिन्न संस्थाओं में आपको प्रतिनिधित्व दिया जाता है। आपने परोपकारिणी सभा के माध्यम से महर्षि दयानन्दजी की निर्वाण शताब्दी अजमेर की सफलता के पीछे आप का अपार योगदरान रहा। सालों से उपेक्षित रहे महर्षि दयानन्द जी के जन्म स्थल-टंकारा को, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से, उसके अधिकार में लाकर उसको विश्व दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित करने का अद्भूत एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। आप हिन्दु शुद्धि-सभा के प्रधान होने के कारण हिन्दु धर्म की सेवा करते रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान शताब्दी वर्ष के अवसर पर आपने स्वयं उत्तरादायित्व स्वीकार करते हुए, महर्षि बलिदान स्थल-अजमेर में एक ऐतिहासिक व सफल समारोह का आयोजन किया, जिसे देखकर देश-विदेश के पत्रकार प्रभावित हुए। आप प्रसन्न चेहरा, मधुरवाणी, उन्नत ललाट, दीर्घदृष्टि और बेनमून व्यवस्थापन क्षमता के धनी है साथ ही आप में प्रचुर सेवाभाव, सत्यनिष्ठा और आर्यसमाज के प्रति अनन्य लगन के दर्शन होते है। आपकी प्रतिभा से युवाओं को प्रेरणा मिलती है और आपको सबका सहयोग प्राप्त होता है। इन सब सद्गुणों की वजह से आपने आगरा, मथुरा, दिल्ली, बम्बई, लन्दन, न्यूयोर्क, नेपाल आदि स्थलों पर हुए भव्य और सफल आर्य महासम्मेलनों में आपकी संगठन क्षमता का परिचय दिया है।

आपकी बेटी मंजू एवं पुत्र श्री अजय आपके कार्य में सदैव सहयोग करते रहे है, ऐसे आपका पूरा परिवार आर्यसमाज की विचारधारा और उसके माध्यम से हो रहे सेवाकार्य को समर्पित है और निरन्तर 90 वर्ष की आयु में भी डी.ए.वी. और टंकारा ट्रस्ट में प्रतिदिन अपना योगदान दे रहें है।

– चन्द्रमोहन आर्य

आओ आनन्द प्राप्त करें

एक छोटी सी कहानी कहूं और उससे ही अपनी चर्चा शुरु करूं।

एक रात, एक सराय में, एक फकीर आया। सराय भरी हुई थी, रात बहुत बीत चुकी थी और उस गांव के दूसरे मकान बंद हो चुके थे। सराय का मालिक भी दरवाजा बंद करने ही जा रहा था, तभी वह फकीर आ पहुंचा। उसने कहा, कैसे भी हो, मुझे रात भर टिकने के लिए जगह चाहिए। इस अंधरी रात में अब मैं और कहां जाऊं। सराय के मालिक ने कहा, ठहरना तो हो सकता है, लेकिन अकेला कमरा मिलना कठिन है। एक कमरा है, उसमें एक मेहमान अभी-अभी आकर ठहरा है, वह जागता होगा, क्या तुम उसके साथ ही उसके कमरे में सो सकोगे? फकीर राजी हो गया। एक कमरे में दोनों मेहमान ठहरा दिए गए।

फकीर जा कर बिस्तर पर लेट गया, पर न तो उसने अपने जूते खोले, न अपनी टोपी निकाली। वह सारे कपड़े पहने हुए ही लेट गया। दूसरा आदमी जो वहां ठहरा हुआ था, उसे हैरानी हुई, लेकिन अपरिचित आदमी से कुछ कहना ठीक न था। उधर फकीर करवटें बदलता रहा। उसे नींद ही नहीं आ रही थी।

दूसरे आदमी के बर्दाशत के बाहर हो गया। उसने कहा, महानुभाव, ऐसे तो रात भर नींद नहीं आएगी, आप करवट बदलते रहेंगे। कृपा करके जूते उतार दें, टोपी उतार दें, फिर ठीक से सो जाएं। थोड़े सरल हो जाएं तो शायद नींद आ जाए। इतने जटिल होकर सोना बहुत मुश्किल है। फकीर ने कहा, मैं भी यही सोचता हूं। लेकिन कमरे में अकेला होता तो कपड़े निकाल देता, तुम्हारे होने की वजह से मैं मुश्किल में हूं। उस आदमी ने कहा, इसमें मुश्किल क्या है? फकीर कहने लगा, मुश्किल यह है कि अगर मैं कपड़े निकालकर सो गया, तो सुबह जब मेरी नींद खुलेगी, मैं कैसे पहचानूंगा कि मैं कौन हूँ? मैं अपने कपड़ों से ही खुद को पहचानता हूं। यह कोट मेरे ऊपर है, तो मुझे लगता है कि मैं 'मैं' ही हूं। वह पगड़ी मेरे सिर पर है, तौ मैं जानता हूं कि मैं 'मैं' ही हूं। इस पगड़ी, इस कोट को पहने हुए आईने के सामने खड़ा होता हूं तो पहचान लेता हूं कि मैं 'मैं' ही हूँ। अगर कमरे में अकेला होता तो कपड़े निकाल कर सो जाता, बदलने का कोई डर न था। फकीर ने आगे कहा, तुम मुझे पागल कहोगे। पर मैंने दुनिया में जिसे भी देखा, वे सब अपने कपड़ों से ही अपने को पहचानते हैं। अगर मैं पागल हूं, तो सभी पागल हैं। आप भी अपने को कपड़ों से ही पहचानते हैं क्या? कपड़े बहुत तरह के हैं-नाम भी एक कपड़ा है, जाति भी एक कपड़ा है, धर्म भी एक कपड़ा है। मैं हिन्दू हूं, मैं मुसलमान हूं, मै जैन हूं-ये सब कपड़े हैं, ये भी बचपन में, बाद में पहनाए गए हैं। तेरा यह नाम है, मेरा यह नाम है-ये भी कपड़े हैं, ये भी बचपन में बाद में पहनाए गए हैं। इन्हीं को हम सोचते हैं अपना होना।

एक आदमी सुबह ही सुबह आपको रास्ते पर मिल जाता है, आप हाथ जोड़ते हैं, नमस्कार करते हैं और कहते हैं, मिलकर बड़ी खुशी हुई। और मन में सोचते हैं कि इस दुष्ट का चेहरा सुबह-सुबह ही कैसे दिखाई पड़ गया। तो आप सरल कैसे हो सकेंगे? ऊपर प्रेम की बातें हैं, भीतर घृणा के कांटे हैं। ऊपर प्रार्थना है, गीत है, भीतर गालियां हैं। ऊपर मुस्कराहट है, भीतर आंसू है। तो इस विरोध में, इस आत्मविरोध में, इस सेल्फ कंट्राडिक्शन में जटिलता पैदा होगी, उलझन पैदा होगी। परमात्मा कठिन नहीं है, लेकिन आदमी कठिन है। कठिन आदमी को परमात्मा भी कठिन दिखाई पड़ता है तो कोई आश्चर्य नहीं। सरलता तभी प्रकट होगी, जब आप भी सरल हों। परमात्मा सरल हृदय के सामने ही सरलता से प्रकट हो सकता है। लेकिन यह सरल नहीं है। क्या आप आनन्द को उपलब्ध करना चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं कि आपके जीवन के अंधकार में सत्य की ज्योति उतरे? तो स्मरण रखें-सरलता के अतिरिक्त सत्य का आगमन नहीं होता है। सिर्फ उन हृदयों में सत्य का बीच फूटता है, जहां सरलता की भूमि है। इस कारण परम आनन्द प्राप्त करना हो सरल बनें, सरलता/सत्यता से व्यवहार करें।

अजय टंकारावाला

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 16, 17, 18 फरवरी 2015 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा, जोकि 1 फरवरी 2015 का अंक होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 30 दिसम्बर 2014 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई तो सुविधाजनक रहेगा अथवा वाल्मिकी फौण्ड में वर्ड फाईल में टाईप की हुई ई-मेल द्वारा सब्जेक्ट में बोधांक 2015 अर्किटल लिखकर tankarasamachar@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

- अजय, सम्पादक

डाक द्वारा भेजने का पता टंकारा समाचार, ए-419, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

टंकारा में बोधोत्सव 2015 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

आओ धरती को स्वर्ग बनाएं

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

ऋग्वेद का एक मन्त्र है-**ऋतस्य देवा अनु व्रता गुर्भुवत्परिष्टिर्द्यौर्न भूम। वर्धन्तीमापः पन्वा सुशिश्विमृतस्य योना गर्भे सुजातम्॥** (ऋ. 1-65-2) इस मन्त्र में बताया गया है कि हम पृथिवी को कैसे स्वर्ग अर्थात् सुखी बना सकते हैं या स्वयं को किस प्रकार स्वर्गवासी (सुखी) बना सकते हैं। (भूम द्यौ नः यदि इस धरती को स्वर्ग बनाना है तो) मन्त्र में पहला ही सूत्र दिया गया है कि **1. ऋतस्य अनुगुः**- हम सदा ऋत का ही पालन करें..प्रत्येक कार्य को ठीक समय और स्थान पर करें... . परमात्मा के नियमों पर आस्था रखें, सूर्य व चन्द्र के समान हमारी दिनचर्या हो। मूलतः प्रकृति-विषयक सब नियम ऋत तथा जीव-विषयक सब नियम सत्य कहलाते हैं मगर भावात्मक स्तर पर इन दोनों के ही अर्थ शाश्वत् सत्य को प्रकट करते हैं। यही नहीं प्रसंगानुसार प्रभु को सत्य वेदज्ञान को तथा प्रज्ञा की ऊँची स्थिति को भी हम ऋत कह सकते हैं।(ब्राह्मण ग्रन्थों तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों में सत्य, सूर्य, अग्नि, चक्षु, मन, ब्रह्म और ओम् अक्षर को भी ऋत कहा गया है, निरूक्त 8-6 में ऋत-यज्ञ को कहा है), **2. व्रता अनुगुः**- हम व्रतों का अनुपालन करें। व्रतों से तात्पर्य आजकल के तथाकथित व्रतों से नहीं है बल्कि व्रत का सीधा सा अर्थ है कि हम जीवन में संकल्पशील बनें। जो-जो भी कार्य हमें वेद में निर्दिष्ट है, उनका दृढ़ता के साथ अनुपालन करें, संक्षेपतः यही व्रती बनना है, **3. परिष्टिः**- सत्य का अन्वेषण करें अर्थात् सत्य को जानें और फिर उसका अनुपालन करें। व्यक्ति को यह भी पता चल जाता है कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है, जीवन में भद्र क्या है और अभद्र क्या है, अच्छा क्या है और बुरा क्या है, मेरे लिए हितकर क्या है और अहितकर क्या है, सत्य क्या है और असत्य क्या है मगर यदि वह जानकर भी उन नियमों का दृढ़ता के साथ अनुपालन नहीं करता है तो उस जानने का कोई लाभ नहीं है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए अर्थात् निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए..., **4. वर्धन्तीमापः**-आप्त लोग जिस प्रभु की स्तुति करते हैं हम भी उस परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना व उपासना करें। इन नियमों पर चलने से जहाँ हमारा व्यक्तिगत जीवन सुखी होगा वहीं दूसरी ओर हमारे परिवार का तथा समाज का जीवन भी सुखमय हो जायेगा। सामजंस्य और समरसता स्थापित होगी। मन्त्र में आगे कहा गया है कि इस प्रकार-**ऋतस्य योनौ** ऋत् के गृह में अर्थात् जहाँ ऋत् का पालन होता है प्रभु का प्रकाश उसी गृह में होता है और **गर्भे सुजातम्** हमारे हृदय में बैठे प्रभु से हमारा साक्षात्कार हो जायेगा... इस प्रकार लौकिक सुख के साथ-साथ हम पारलौकिक आनन्द को भी प्राप्त कर सकेंगे.....

इसी वेद में अन्यत्र कहा गया है-**धर्मणा मित्रावरूणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया। ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्।** (ऋ.-63-7) **(व्रतो रक्षेथे)** यदि हम अपने व्रतों का रक्षण करना चाहते हैं, व्रतमय जीवन बनाना चाहते हैं, **(ऋतेन)** उस सत्य तक पहुँचना चाहते हैं, **(सूर्यम्)** ज्ञानवान् बनना चाहते हैं और अपने **(रथम्)** शरीर को स्वस्थ बनाना चाहते हैं तो **(मित्राः वरूणः)** स्नेहिल बनें और द्वेषरहित बनें। हमें जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को, बल्कि प्राणीमात्र को अपना स्नेह ही बांटना चाहिए किसी प्रकार का भी वैर-विरोध या ईर्ष्या-द्वेष कदापि नहीं करना चाहिए। ऐसे व्यवहार से कुटिलता और अविश्वनीयता बढ़ती है जबकि प्रेम और सौहार्द से समरसता और विश्वसनीयता बढ़ती है। किसी ने बहुत ही सुन्दर कहा है कि **'मुझे आश्चर्य होता है कि लोग नफ़रत के लिए कैसे समय निकाल पाते हैं जबकि जीवन प्रेम करने के लिए भी बहुत छोटा है।'**

जब हम वेद की इन भावनाओं को अपने भीतर आत्मसात् कर लेंगे तो हमारा जीवन ही यज्ञमयी बन जाएगा। ऐसे जीवन में दान-वृत्ति होगी, देवपूजा होगी और सार्वभौमिक संगतीकरण करने का भाव होगा. ...इस प्रकार का उत्कृष्ट यज्ञमयी जीवन बनाने के लिए वेद हमें प्रेरणा देता है-**प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सुनृता। अच्छा वीरं नर्य पक्तिंराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः॥** (सामवेद 56) मानव जीवन एक यज्ञ है इसलिए हमारा जीवन यज्ञमयी बना रहे इसके लिए इस मन्त्र में कहा गया है-**(ब्रह्मणस्पतिः)** ज्ञान का पति सर्वज्ञ प्रभु **(प्र ऐतु)** हमें प्रकर्षेण प्राप्त हो अर्थात् हम निरन्तर उपासना करके प्रभु को अपने अंग-संग करें। उपासना व्यक्ति के जीवन में सबसे अनिवार्य कार्य है क्योंकि उपासना से व्यक्ति का जीवन निरन्तर देवत्व को प्राप्त करता चला जाता है और समस्त कुटिलताएँ स्वतः उसके हृदय से बाहर निकलती रहती हैं। उपासना है प्रभु के निकट बैठना अर्थात् परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव को अपने भीतर आत्मसात् करना। सही ढंग से उपासना करने से व्यक्ति के हृदय से वैर-विरोध तथा ईर्ष्या-द्वेष की समस्त कुभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं.... इसीलिए वेद में आगे कहा है **(सूनृता)** (सु उन् ऋत) दुःखों का परिहाण करने वाले सत्यवाणीरूप (देवी प्र एतु) दिव्य गुण हमें प्रकर्षेण प्राप्त हो जाएंगे। हमारा जीवन ही सत्यमय हो जायेगा.... हमारा स्वभाव ही सत्य हो जाऐगा...हम जो भी कार्य करेंगे सत्य और असत्य को परखकर ही करेंगे....हमारा आचरण ही सत्य हो जाऐगा। यही नहीं हम स्वयं तो सत्य के साथ जुड़ेंगे ही मगर इससे भी बड़ी बात वेद में कही है कि (देवाः) हमें यज्ञिय-वृत्ति वाली सन्तान भी प्राप्त होगी। इस प्रकार हमारा अपना जीवन भी सुखमय बनेगा और समाज व विश्व भी सुखी बनेगा तथा आने वाली पीढ़ियाँ भी सत्य आदि का अनुकरण करती हुई चारों ओर स्वर्ग का वातावरण उत्पन्न करने में समर्थ हो सकेंगी...

-महादेव, तहसील-सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)-174401

परिस्थितियां

जब दिमाग कम होता है,
परिस्थितियाँ समस्या बन जाती हैं...
जब दिमाग स्थिर होता है,
परिस्थितियाँ चुनौती बन जाती हैं...
जब दिमाग मजबूत होता है,
परिस्थितियाँ अवसर बन जाती हैं...

वेद-ज्ञान से मानवोन्नति किस प्रकार सम्भव है?

❒ ब्र. शिवदेव आर्य

परमपिता परमेश्वर ने जब सृष्टि का निर्माण किया तब सृष्टि में अनेकविध जड़-चेतनों का निर्माण किया। इन नाना विध जड़-चेतनों में यदि कोई सर्वश्रेष्ठ है तो वह है मनुष्य। जैसे परमपिता परमेश्वर ने अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को बनाया है ठीक वैसे ही मनुष्यों ने भी अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में संसार का निर्माण किया है। इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। मनुष्य ने जिस प्रकार के नियम और व्यवस्था की है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने पूर्णरूपेण से परमपिता परमेश्वर की ही नकल की है क्योंकि परमेश्वर अपने द्वारा निर्मित सृष्टि के नियमों के सदैव अनुकूल रहता है वैसे ही मनुष्य अपने द्वारा निर्मित समाज के नियमों में बंधा हुआ होता है। इस प्रकार हम इसके मूल को खोजें तो हमें ज्ञात होता है कि अनुशासन में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। परमेश्वर अपने द्वारा निर्मित सृष्टि नियमों के सर्वदानुकूल रहता है। क्योंकि परमेश्वर अपने आपमें अनुशासित होता है। यदि परमेश्वर अनुशासित नहीं होता तो प्रतिदिन प्रलय और निर्माण करता रहता। वह १४ मन्वन्तरों के इतने लम्बे समय की प्रतीक्षा नहीं करता। जिस समय जो चाहता वही करता। इसी अनुशासन को हम जड़-चेतन दोनों में ही देख सकते हैं। जड़रुपी सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रादि यदि अनुशासन के अन्दर नहीं होते तो ये सब अपनी इच्छा से गति करते और इच्छा होती तो गति नहीं भी करते परन्तु ऐसा नहीं है।

इसीलिए अनुशासन की नितान्त अनिवार्यता है। इसी कारण अनुशासन के अभाव में अव्यवस्था न फैल जाये। इस प्रकार सोचकर परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में चार सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को वेद का ज्ञान दिया। आज हम समाज में बहुत बड़ी बिडम्बना है कि हम ऋग्वेद को सृष्टि के आदि का ग्रन्थ बताते हैं और अन्य वेदों को बाद का। इस ऐसी विचारधारा वाले हैं मैं उनसे जानना चाहता हूँ कि ऋग्वेद में ऐसा कहाँ लिखा है अथवा अन्य वेदों में किस स्थल पर लिखा है? इस वेद के ज्ञान से सम्पूर्ण प्राणी मात्र अनुशासन सहित अनेक विध ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करें व करावें और धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष को प्राप्त होवें।

पशुओं को अपने जन्म के पश्चात् माँ के स्तनपान करना सीखना नहीं पड़ता। पशुओं में जन्म से ही तैरने का गुण विद्यमान होता है। पशुओं की संवेदन शक्ति बहुत तीव्र होती है। इस बात को वैज्ञानिक लोग भी स्वीकार करते हैं। इसीलिए तो जब कोई मन्त्री या नेता आदि लोग आते हैं उनके सेवक गण गुप्त स्फोटक पदार्थों को ढूढ़ने के लिए मशीन के साथ-साथ कुत्तों को भी लेकर आते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पशु जन्म से ही पूर्ण है। वो भोगों को भोगने के लिए इस सृष्टि पर आये हैं न कि कर्म करने के लिए। इसीलिए पशुओं को भोगयोनि की श्रेणी में रखा जाता है। अतः परमेश्वर ने वेदों का ज्ञान मनुष्यों के लिए प्रदान किया है और इसी ज्ञान से आप्लावित हो हम अपनी उन्नति के मार्ग का अनुसरण करें। हमें संस्कृतज्ञ तो जन्म से ही होता है क्योंकि सभी का मानना है कि मनुष्य जब जन्म लेता है तब वह संस्कृत में ही रोता है, संस्कृत में ही हँसता है आदि-आदि जितनी भी क्रियाकलापों को करता है वह सब-की-सब संस्कृत में ही होती हैं।

सृष्टि के आदि में परमेश्वर ने चार सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को वेद का ज्ञान दिया। ऋग्वेद का ज्ञान अग्नि ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान वायु ऋषि को, सामवेद का ज्ञान आदित्य ऋषि को, अथर्ववेद का ज्ञान अंगिरा को प्रदान किया। इन्हीं ऋषियों की परम्परा से वेदों का शुद्ध ज्ञान आज हम को प्राप्त हो रहा है। इन चारों वेदों में तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सम्पूर्ण ज्ञान विद्यमान है। पुनरपि मुख्य रूप से ज्ञाान, कर्म और उपासना ये तीन वेदों के मुख्य विषय हैं।

माता-पिता जिस प्रकार अपनी सन्तान को कार्य करने के लिए सुख, सुविधा के लिए उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं वैसे ही संसार के लोगों के लिए उस परमेश्वर ने आवश्यक वस्तु वेद को मानव समाज को दिया। इन वेदों में वो सम्पूर्ण सामग्री है जिसे पाकर मनुष्य सुख-शान्ति व समृद्धि को पाकर अत्यन्त परमधाम मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

जब हमारा जन्म होता है तब हमारी माता जी हमें बताती हैं कि अमुक व्यक्ति तुम्हारा भाई हैं, पिता हैं इत्यादि। जितना माता अपने बच्चों से प्यार करती है, उतना और कोई कदापि नहीं कर सकता।

वेदों को भी इसीलिए वेदमाता प्रचोदयन्ताम्........मन्त्र में वेद को माता के नाम से सम्बोधित किया जाता है। क्योंकि वेदमाता परमपिता परमेश्वर के विषय में जितना बता सकती है, उतना और दूसरा कोई नहीं बता सकता इसलिए परमपिता परमेश्वर को अच्छी प्रकार से जानने के लिए वेद को जानना और मानना नितान्त अनिवार्य है। मानव समाज के लिए वेद की भूमिका में सबसे महत्वपूर्ण बात है आस्तिक बनना। जब व्यक्ति आस्तिक हो जायेगा तो समाज अत्यधिक उन्नति करेगा। आस्तिकता के आते ही मनुष्य अनुशासित हो जाता है। अनुशासन के अन्तर्गत ही मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करने लगता है। आस्तिक होने का सीधा-साफ अर्थ है-परमेश्वर को सर्वव्यापक मानना। इसी से मनुष्य जब भी कोई कार्य करता है तब यही महसूस करता है कि उसे परमेश्वर देख रहा है। परन्तु वर्तमान समय में अनुशासन नहीं हैं, इसका कारण है कि हम आस्तिक नहीं हैं, वेद को नहीं मानते। (नास्तिको वेद निन्दकः)

इसी अनुशासन के अभाव में दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। इन सब समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए हमें वेद की शरण में जाना पड़ेगा। वेदों की महत्वपूर्ण भूमिका मनुष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि- मेरा घर-परिवार सुखी हो, समृद्धि से भरा हो, मेरा पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी मधुभाषी हो आदि-आदि......। इन्हीं बातों को वेद में इस प्रकार व्यक्त किया गया हे-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान्।।

अर्थात् पुत्र पिता का अनुव्रती होवे अर्थात् पिता के व्रतों को पूर्ण करने वाला हो। पुत्र माता के साथ उत्तम मन वाला हो अर्थात् माता के मन को संतुष्ट करने वाला हो। पत्नी पति के साथ मधुर एवं शान्ति युक्त बोले। इसी बात को चाणक्य ने लिखा है कि-

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी।
विभवे यश्च संतुष्टस्तस्य स्वर्गम् इहैवहि।। (चाणक्यनीति)

मनुष्य को सुखी रखने के लिए चाणक्य जी कहते हैं कि-

ते पुत्रा ये पितुर्भक्ता स पिता यस्तु पोषकः।
तन्मित्रं यस्य विश्वासः सा भार्या यत्र निवृत्तिः।।

पुत्र वही है जो पिता का भक्त हो और पिता वही जो पुत्र का पालन पोषण करता हो, मित्र वही जिस पर विश्वास किया जाये और पत्नी वही है जिससे सुख प्राप्त किया जाए।

इस प्रकार वेद तथा ऋषिग्रन्थ यही बताते हैं कि सुखी जीवन के लिए परिवार में परस्पर उत्तरदायित्व तथा सहयोग की भावना बनी रहे।

मानव समाज को व्यवस्थित रखने के लिए लोगों के कार्य भी व्यवस्थित होने चाहिए। इसीलिए वेद में कहा गया है-

ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद् बाहू: राजन्य: कृत:।
उरु तदस्य यद् वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि सम्पूर्ण संसार के मनुष्यों को कर्म के आधार पर चार भागों में बाँटा गया है।

ब्राह्मण: वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना-कराना, यज्ञ करना-कराना, दान लेना तथा देना करना कर्मों को करना ब्राह्मणों का परम कर्तव्य है।।

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहञ्चैव ब्राह्मणनामकल्पयत्॥ (मनु.-१/८८)

क्षत्रिय: प्रजा का रक्षण, दान देना, यज्ञ करना, वेदाध्ययन करना एवं विषयों में आसक्त न होना आदि कर्मों को करना क्षत्रियों का परम कर्तव्य है।

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याऽध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रशक्ति क्षत्रियस्य समासत:॥ -मनु.-१/८९)

वैश्य: पशुओं का रक्षण, दान देना, यज्ञ करना, वेदाध्ययन करना, वाणिज्य-व्यापार आदि कर्मों को करना वैश्यों का परम कर्तव्य है।

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वाणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥-मनु-१/९०)

शूद्र: उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा शुश्रूषा करना शूद्रों के कर्म हैं।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभु: कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥ -मनु. १/९१)

इस प्रकार की वर्ण व्यवस्था समाज में होने से सुख-शान्ति का माहौल बना रहता है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो कर्म योनि के अन्तर्गत आता है। मनुष्यों को कार्य करने की स्वतन्त्रता है परन्तु फल भोगने की स्वतन्त्रता नहीं है। जैसे योगेश्वर श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि-

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते संगोस्त्वकर्मणि॥

मनुष्य कर्म करने में सर्वदा स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। इसीलिए उसे सत्य-असत्य, धर्म- अधर्म का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि इन्हीं कर्मो के अनुसार मनुष्यों को फल मिलता है। अच्छे बुरे कर्मों की पहचान के लिए कहा गया है कि -'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' अर्थात् स्वयं को जो व्यवहार अच्छा न लगे, उसे अन्यों के साथ कदापि नहीं करना चाहिए। हमारी आत्मा सही गलत का सही निर्णायक है। इसीलिए जब अपनी आत्मा को कोई कार्य अच्छा न लगता हो भला वह कार्य दूसरों के लिए कैसे हितकर हो सकता है? ऐसी विचारधारा के होने से हम गलत कार्यो के करने से रुक जायेंगे।

मनुष्य का सदाचारी होना बहुत जरूरी है। सदाचारी मनुष्य ही समाज में सुखी रह सकता है और दूसरों को सुख दे सकता है। वर्तमान समाज में सदाचार की नितान्त अनिवार्यता है। इसके लिए वेद हमें उपदेश देते हुए कहता है कि-

सप्त मर्यादा: कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यं हुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीतो पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ॥

(ऋग्वेद-१०/५/६)

अर्थात् हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और इन पापों के करने वालों दुष्टों का सहयोग करने का नाम सप्त मर्यादा है। इनमें से जो एक भी मर्यादा का उल्लंघन करता है अर्थात् एक भी पाप करता है, वह पापी होता है और जो धैर्य से इन हिंसादि पापों को छोड़ देता है, वह निस्संदेह जीवन का स्तम्भ (आदर्श) होता है और मोक्षभागी होता है।

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जाहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं द्वषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र॥

(ऋग्वेद-७/१०४/२२)

अर्थात् गरुड़ के समान मद (घमंड), गीध के समान लोभ, कोक के समान काम, कुत्ते के समान मत्सर, उलूक के समान मोह (मूर्खता) आदि भेड़िया के समान क्रोध को मार भगना अर्थात् काम, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि छह विकारों को अपने अन्त:करण से हटा दो।

आज संसार में सत्यता का अभाव है इसीलिए कहा जाता है कि- **'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्.........'** सत्य बोलने के साथ-साथ मधुर भाषण होना चाहिए। अत: कहा गया है कि-

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि॥
मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधु संदृश:॥

(अथर्ववेद-१/३४/२-३)

अर्थात् मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधुरता हो और जिह्वा के मूल में मधुरता हो। हे मधुरता! मेरे कर्म में तेरा वास हो और मेरे मन के अन्दर भी तू पहुँच जा। मेरा आना-जाना मधुर हो, मैं स्वयं मधुर मूर्ति बन जाऊँ।

हमारी किसी भी इन्द्रिय से अभद्र, असभ्य और अमङ्गल व्यवहार न होवे इसके लिए वेद बारम्बार आदेश देता है-

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसमस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:॥

(यजुर्वेद-२५/२१)

समाज में शराब पीना व जुआ खेलना एक शौक हो गया है। इन कृत्यों से समाज का निरन्तर पतन ही हो रहा है। एतदर्थ इनकी रोकथाम के लिए वेद कहता है कि-

हृत्सु पीतासो युध्यन्त दुर्मदासो न सुशरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते॥

अर्थात् दिल खोलकर शराब पीने वाले दुष्ट लोग आपस में लड़ते हैं और नंगे होकर व्यर्थ बड़बड़ाते हैं, इसीलिए शराब कदापि नहीं पीनी चाहिए। जिस प्रकार शराब पीना बुरा है, उसी प्रकार जुआ खेलना भी बुरा है। वेद उपदेश देता है:-

जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरत: क्वस्वित्।
ऋणावा विभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति॥

अर्थात् जुआरी की स्त्री कष्टमय अवस्था के कारण दु:खी रहती है, गली-गली मारे-मारे फिरने वाले जुआरी की माता रोती रहती है, कर्ज़े से लदा हुआ जुआरी स्वयं सदा डरता रहता है और धन की इच्छा से वह रात के समय दूसरों के घरों में चोरी करने के लिए पहुँचना है, इसलिए जुआ खेलना अत्यन्त बुरा है। **(शेष पृष्ठ 22 पर)**

प्रभु कृपा

❒ टंकारा श्री अरूणा सतीजा

आज से 88 वर्ष पूर्व 23 दिसम्बर 1926 की शाम को गो धूली बेला में, जब सूर्य अस्ताचल की ओर प्रस्थान की तैयारी कर रहा था ठीक उसी समय धरती पर एक महान आत्मा का प्रस्थान भी देवलोक को हुआ।

उसी अमर बलिदानी महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनकी शहादत के पावन अवसर पर चन्द पक्तियों द्वारा श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि उनके चरणों में सादर समर्पित करती हूँ।

वे लोग बड़े भाग्यशाली होते है जिन पर प्रभु कृपा बरसती है। जब एक बार बरसना शुरु होती है तो फिर बरसती ही जाती है। ऐसे सौभाग्यशाली लोगों में से एक थे मुंशीराम जिन्होंने बृहस्पति से महात्मा श्रद्धानन्द के नाम से विश्व में ख्याति प्राप्त की।

प्रथम द्रष्टा के रूप में वे एक मनचले, नास्तिक, शराबी, मांसाहारी, भोगी, विलासी एवं रईस बाप की बिगड़ी सन्तान थे। पिता दिन रात उनकी चिन्ता से चिन्तित रहते थे।

बरेली में स्वामी जी की सत्संग सभा में उनकी अनुशासन बनाये रखने की डयूटी थी। क्योंकि वह एक पुलिस अधिकारी थे। पिता जी स्वामी जी के उपदेशों से काफी प्रभावित थे। वह अपने नास्तिक बेटे को भी वहां ले जाना चाहते थे। शायद वह सुधर-जाए मात्र पिता की आज्ञा के पालन हेतु वह स्वामी जी के सभास्थल पर गये। परन्तु मन में एक संशय था कि यह संस्कृत पढ़ा साधु मुझे क्या उपदेश देगा। वह नहीं जानते थे कि उनके जीवन में सुनहरे अवसर का उदय होने वाला है। स्वामी जी की तेजस्विता तथा दस मिनट के भाषण व उपदेश ने मुंशीराम को ऋषि का ऐसा दीवाना बना दिया कि वह उनके दर्शन के लिए पागल हो उठे।

दोपहर के भोजन के पश्चात वह बेगम-बाग की कोठी में पहुंच जाते और ऋषिवर को नमस्ते करने वालों में वह पहले व्यक्ति होते। औरों की तरह वह भी स्वामी जी से प्रश्नोतर करते, परन्तु सदा निरूतर हो जाते। एक दिन पांच मिनट के प्रश्नोतर में ऐसे घिरे कि मुँह पर मुहर लग गई। एक दिन उन्होंने ने स्वामी जी से कहा आप की तर्क शक्ति बड़ी प्रबल है। मुझे तर्कों द्वारा चुप तो करा देते हो परन्तु कभी यह विश्वास नहीं दिलाया कि ईश्वर की कोई हस्ती है। स्वामी जी मुस्करायें परन्तु बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया। मैंने कब तुम्हारे से प्रतिज्ञा की थी मैं तुम्हारा विश्वास ईश्वर में करा दूँगा। तुम्हारा ईश्वर पर तो तब विश्वास होगा जब ईश्वर की कृपा तुम पर होगी।

मुंशी राम के हृदय में सुप्त-संस्कार एवं धार्मिक भावनाएँ जागृत होने लगी। ऋषि उपदेशों ने उसे कल्याण मार्ग का पथिक बना दिया। नास्तिकता आस्तिकता में बदल गई। जीवन सन्मार्ग की और प्रेरित हो उठा। ईश कृपा के अमृत से उनका हृदय लबालब हो गया। प्रभु कृपा से जीवन की प्रत्येक घटना उन्हें परोपकार की ओर खींचने लगी। पत्नी के त्याग ने उन्हें सच्चा संन्यासी बना दिया।

एक दिन मुंशीराम जी मानसिक रोग से ग्रस्त हो गये, आँखें पथरा गई। रात को एक बजे आँख खुली तो पत्नी को बिना खाये पीये अपनी सेवा में पाया। शार्मिदगी से अपनी करनी पर क्षमा याचना करने लगे तो देवी ने उत्तर दिया आप मेरे स्वामी हो, आप की नित्य-प्रति सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है।'' वह महान रात तो बीत गई परन्तु मुंशी राम को महात्मा मुंशी राम बनाई गई। जीवन की हर बुराई पीछे छूट गई।

जीवन की दूसरी घटना ने उन्हें 32 वर्ष की आयु में ही अखण्ड ब्रह्मचारी बना दिया। 21 अगस्त 1897 ई. में उनकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया। पत्नी द्वारा लिखे एक कागज के टुकड़े ने उनके भविष्य का निर्णय कर दिया। आप को तो मुझ से अधिक रूपवती सेविका मिल जाएगी परन्तु इन बच्चों को मत भूलना (बच्चों की आयु क्रमश: 2,4,6 वर्ष थी। रात को घण्टों तक ईश्वर से शक्ति का वर मांगा (क्योंकि अब नास्तिक नहीं आस्तिक बन चुके थे। प्रभु शक्ति पर उन्हें अटूट विश्वास हो चुका था। अन्त में निश्चय किया कि बच्चों के लिए माता का स्थान भी वह स्वयं लेंगे। इसी भावना ने उन्हें गुरुकुल का आचार्य बना दिया। 17 वर्षो तक स्वयं द्वारा स्थापित विश्व विख्यात गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य एवं मुख्य अधिष्ठाता रहने के 12 अप्रैल 1917 को मायापुरी वाटिका कनखल में सन्यास आश्रम में प्रवेश करके स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए। इस अवसर पर उन्होंने अपने भाव इस प्रकार प्रगट किये।

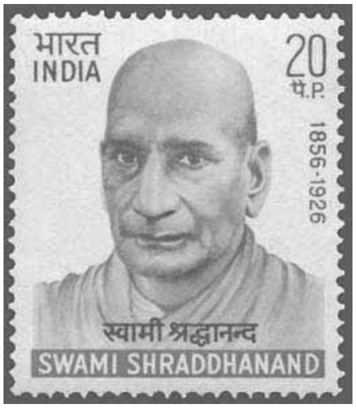

आज से कई वर्ष पूर्व सरकार द्वारा जारी डाक टिकट का दुर्लभ चित्र

''ईश कृपा से श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के जीवन को मैंने पूरा किया है, श्रद्धा मेरे जीवन की अराध्या देवी है। अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही सन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। यज्ञकुंड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम श्रद्धानन्द रख रहा हूँ।'' उन्होंने श्रद्धा को गुरु बनाया। किसी से सन्यास दीक्षा नहीं ली। अत: पुत्रैषणा, लोकेषणा, गुरुकुलैषणा त्याग कर निद्वन्द्व होकर लेक सेवा में जुट गये।

कठोपनिषद के ऋषि वाजश्रवस तथा अपने गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द की तरह सर्व मेध यज्ञ यज्ञ किया। सब से पहले अपने ही पुत्रों को गुरुकुल में प्रवेश कराया। 1959 ई. में अपना पुस्तकालय 1964 ई. में सत्यधर्म प्रचारक प्रैस अन्त में तीस हजार रूपये की लागत की कोठी दान कर सर्व वै पूर्ण स्वाहा करके सर्वमेघ यज्ञ की पूर्णाहूति दे दी। अब तक वह पूर्ण रूप से आर्य समाज की शरण में जा चुके थे। सत्यार्थ प्रकाश ने उनके जीवन को शुद्धता की अन्तिम सीमा तक पहुंचा दिया। उन्होंने आर्य समाज के मंच से अपने प्रथम भाषण में कहा ''हम सब के कर्त्तव्य व मन्तव्य एक होने चाहिए। उपदेशक बनने का अधिकार मात्र उन्हें होना चाहिए जिनका जीवन बोलता हो, दिखाई देता हो। उनके इस व्याख्यान से साईदास इतने प्रभावित हुए तथा अपनी प्रसन्नता व आशा व्यक्त करते हुए उनके मुँह से निकल पड़ा कि आर्य समाज में एक नयी स्पिरिट आयी है देखें। यह आर्यसमाज को तारती है या डुब्बो देती है। एक दिन प्रात: भ्रमण में उन्होंने देखा एक व्यक्ति भेड़ बकरियों सेमराटों करा सिर पर रखकर तेजी से भाग रहा है। इस दृश्य ने उन्हें शुद्धशाकाहारी बना दिया। दोपहर के भोजन में जब उन्हें माँस भी परोसा गया तो उन्हें इतनी ग्लानी हुई कि मांस से भरा कांसी का कटोरा इतनी जोर से दीवार से दे मारा कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। अब वह

पंगल में भी बैठना पसन्द नहीं करते थे। जहां माँस, परोसा जाता हो। प्रभु कृपा से ही दुर्गुण तथा दुर्व्यसन एक एक करके दूर हो गये।

अन्त में उन्होंने शुद्धिकरण को अपने जीवन का मुख्य अंग बनाया। इसी कार्य को करते हुए उन्होंने अपने प्राण आहूत कर दिये। उनके हृदय में दीनों हीनों के लिए अपार प्रेम था वह सभी प्रकार के भेद्रों को खत्म कर सब को गले लगाकर आर्य समाज में दीक्षित रना चाहते थे। उनकी अन्तिम इच्छा भी यही थी कि वह एक बार पुन: भारत की पावन भूमि पर जन्म लेकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करें।

अपने तप व त्याग, सेवा, वीरता व राष्ट्र प्रेम के कारण वह इतिहास पुरुष बन गये। मुंशीराम स्वामी श्रद्धानन्द वाक्शूर नहीं कर्मशूर थे। वह जो कहते थे वह कर दिखाते थें उनके जीवन का यह पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर नास्तिकता से आस्तिकता की ओर अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा ब्रती, संकल्पी चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है जो इतने पतन से इतना ऊँचा उठा, जिसने ऊँचाई की बुलन्दियां छू ली।

महापुरुषों के सम्पर्क से और अन्त: में लुप्त सात्विक भावों के उदबुद्ध होने से ही जीवन में परिवर्तन आता है। यही प्रभु की कृपा कहलाती है। मुंशीराम पर प्रभु कृपा हुई, होती चल गई। वह पतित जीवन से उठकर एक प्रेरक व पथ प्रदर्शक बन गये। उनकी मृत्यु पर गांधी जी ने कहा था–वीर कभी बिस्तर पर नहीं मरते वह तो शहादत देते हैं। महर्षि के सम्पर्क के बाद उन पर प्रभु कृपा बरसने लगी। उनके हृदय में सतत ज्ञान, अग्नि, श्रद्धा, संकल्प तथा आस्तिकताप अर्थात् ईश्वर पर अटूट विश्वास के कारण वह युग पुरुष बन गये। प्रभु कृपा के बारे में बुलेशाह ने बहुत सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है।

चढ़ते सूरज ढलदे वेखे, बुझदे दीवे बलदे वेखे
हीरे दा मुल कोई न पावे, खोटे सिक्के चलेद बेखे
जिन्हां दा न जग विच कोई ओ वी पुतर पलदे वेखे।
लोकी कहदें दाल न गलती असी पत्थर गलदे वेखे
जिन्हां कदर न कीति रब दी। हथ खाली ओ मलदे वेखे।।

हे मानव तू एक दिन भी अटल विश्वास बनकर जी तू कल नहीं जिन्दगी का आज बन कर जी।।

– फ्लैट न. 101, सौम्या एन्क्लेव, बी–9, ध्रव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान)

टंकारा गौशाला में गौ–पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन–पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन–पोषण पर **5000/–**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

–: निवेदक :–

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

योग के साधकों को आश्वासन

❒ स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

महर्षि पतञ्जलि ने अपने योगदर्शन में योग के आठ अंग बताये हैं-(1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि। इनमें प्रथम के चार यम, नियम आसन और प्राणायाम बहिरंग योग कहलाते हैं। अन्त के चार प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अन्तरंग योग हैं।

यम पाँच प्रकार के होते हैं- **''तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः॥''** -यह योगदर्शन का वचन है।

अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन, कर्म, वचन से चोरी त्याग (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता, स्वत्वाभिमानरहित होना, इन पाँच यमों का सेवन सदा करें। नियम-**''शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः॥''** यह योगशास्त्र का वचन है।

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं, किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि-लाभ में हर्ष वा शोक न करना, (तपः) अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान, (स्वाध्याय) पढ़ना-पढ़ाना, (ईश्वरप्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पाँच नियम कहाते हैं।

यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करें। जो यमों का सेवन छोड़ के, केवल नियमों का सेवन करता है, वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता, किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है। इस तथ्य के समर्थन में निम्नलिखित मनुस्मृति का श्लोक देखने योग्य है-

''यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।
यमान्पत्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन्॥'' -मनु. /204

यम और नियम जीने के महत्वपूर्ण अंग हैं, इनके अभाव में योग की साधना असम्भव है। यहाँ एक और सच्चाई ध्यान में रखनी चाहिये कि सदाचारी गृहस्थ भी योग की साधना आराम से कर सकता है।

योग का तीसरा अंग है **आसन**। योगदर्शन का सूत्र है-

''स्थिरसुखमासनम्'' योगसाधना के लिये लम्बे समय तक स्थिर होकर सुखपूर्वक बैठना। योगसाधना के लिये मुख्य रूप से सिद्धासन, पद्मासन व, सुखासन बताये जाते हैं। आसन के सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि दोनों पुठ्ठे समान रूप से आसन पर स्थित हो, कमर में जहाँ त्रिकास्थि है वहाँ से मेरूदण्ड गर्दन तक सीधा रहे। इससे इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों नाड़ियाँ खुली रहे और प्राणों का आवागमन होता रहे। साधना के लिये इतना ही आसन पर्याप्त है।

योग का चतुर्थ अंग है **प्राणायाम**। प्राणायाम में प्राणों को श्वास से दोनों नथुनों से बाहर निकालकर रोकना वायु और मूल को संकुचित करना लाभकारी है। अधिक देर बाह्यवृत्ति अर्थात् बाहर रोकना उत्तम है। स्वाभाविक रूप से श्वास अन्दर लेकर थोड़ा रोककर फिर बाहर रोकना मूल वायु का संकोच करना लाभकारी है। इससे इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों खुलकर सक्रिय हो जाती हैं और साधना में सहयोग मिलता है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम, ये चारों बहिरंग हैं। प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये चारों अन्तरंग योग हैं। प्रत्याहार का अर्थ है कि ज्ञान इन्द्रियों को वाह्य विषयों से अन्तर्मुखी करके परमेश्वर में ध्यान लगाना। भगवान ने आँख, कान, नाक आदि ज्ञान इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है, इसीलिये वे बाहर के विषयों को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं उन्हें अन्तर्मुखी करके परमेश्वर के गुण, चिन्तन में लगाना प्रत्याहार है, इसीलिये योगसाधना के समय आँखें अधखुली बन्द कर लेते हैं। कई लोग कानों में रूई का फूहा भी लगा लेते हैं। इससे बाहर के दृश्य, शब्द आदि नहीं सुनायी पड़ते। अन्तरंग योग का द्वितीय साधन ''धारणा'' है। धारणा की परिभाषा है- **''देशबन्धचित्तस्यधारणा।''** चित्त को किसी एक स्थान पर बांध देना। कई लोग दीपक की लौ पर भी धारणा करते हैं। किन्तु परमेश्वर की धारणा के लिये हृदय पुण्डरीक-दोनों छातियों के बीच में खाली जगह पर, नासिकाग्र दोनों भौहों के बीच में आज्ञा चक्र पर (जहाँ पिट्यूटरी ग्लैण्ड्स) और सिर में सहस्रार (जहाँ खोपड़ी में पिलपिला है) उत्तम स्थान है।

इसके पश्चात् ध्यान का क्रम आता है। योगदर्शन में कहा है- **''तत्रैयिकतानता ध्यानम्''** धारणा को एकरस बनाये रखना, कोई विच्छेद न होने देना ध्यान है। ध्यान में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहना उचित है। इसका पूर्ण अभ्यास हो जाने पर समाधि लग जाती है। समाधि में सब कुछ भूल जाता है। ध्यान करने वाला अपने को भूल जाता है, मैं ध्यान कर रहा हूँ यह भी भूल जाता है। केवल परमेश्वर का चिन्तन मात्र ही ध्यान में रह जाता है। समाधि भी सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात दो तरह की होती है। इस समय समाधि के इन दोनों भेदों को अब छोड़ रहे हैं, यह साधना का ऊँचा विषय है। योग साधना में समाधि तक पहुँचना अनेक जन्मों में सिद्ध हो पाता है।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से गीता में पूछा है यदि कोई मनुष्य योग साधना करता-करता भटक जाये तो उसकी क्या गति होती है-

''अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति॥'' गीता. 6/37

अर्जुन बोले-हे श्रीकृष्ण! जो योग में श्रद्धा रखनेवाला है किन्तु संयमी नहीं है, इस कारण जिसका मन अन्तकाल में योग से विचलित हो गया है, ऐसा साधक योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत्साक्षात्कार को न प्राप्त होकर किस गति को प्राप्त होता है?

श्रीकृष्ण जी उत्तर देते हैं कि योग का मार्ग कल्याण का मार्ग है। योग के मार्ग में चलने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। गीता में श्रीकृष्ण के आश्वासन ध्यान देने योग्य हैं-

''पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति॥'' गीता. 6/40

श्री भगवान् बोले- हे पार्थ! उस पुरुष का न तो इस लोक में नाश होता है और न परलोक में ही। क्योंकि हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिये अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता। **''प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।**
शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते॥'' गीता. 6/41

योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर, उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण

वाले श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है।

अथवा वैराग्यवानपुरुष उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता है। परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है, सो संसार में निःसन्देह अत्यन्त दुर्लभ है।

''तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन॥''

गीता. 6/43

वहाँ उस पहले शरीर में संग्रह किये हुए बुद्धि-संयोग को अर्थात् समबुद्धिरूप योग के संस्कारों को अनायास ही प्राप्त हो जाता है और हे कुरुनन्दन! उसके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्रतिरूप सिद्धि के लिये पहले से भी बढ़कर प्रयत्न करता है।

''पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते॥''

गीता. 6/44

वह श्रीमानों के घर में जन्म लेनेवाला योगभ्रष्ट पराधीन हुआ भी उस पहले के अभ्यास से ही निःसन्देह भगवान् की ओर आकर्षित किया जाता है, तथा समबुद्धिरूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लङ्घन कर जाता है।

''प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्विषः।
अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्॥''

गीता. 6/45

परन्तु प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करनेवाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है।

इस सबका यही आशय है कि मनुष्य को जहाँ तक सुयोग सुविधा मिले, शरीर साथ दे, परमेश्वर के साक्षात्कार के लिये योगसाधना अवश्य करते रहना चाहिये। - ''ईशावास्यम्'', पी-30, कालिन्दी हाउसिंग स्टेट, कोलकाता-700089,
फोन : 033-25222636 मो. : 9432301602

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय का महाप्रयाण-एक महती क्षति

❐ डॉ. भवानीलाल भारतीय

कल दूरभाष से कोलकाता के श्री चांदरतन दमाजी ने उपाध्याय जी के निधर का दुःखद समाचार दिया। उपाध्याय जी से मेरे आधी सदी से अधिक सम्पर्क और स्नेह सम्बन्ध रहा। वे उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्म थे। वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति उनका पारिवारिक आकर्षण रहा। आगे चलकर कोलकाता आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशनों पर उन्होंने कई दशकों तक आचार्यत्व का दायित्वपूर्ण कार्य संभाला और अपने ही मार्गदर्शन में पं. आत्मानन्द, पं. नचिकेता आदि कई नवीन कर्मकाण्डी पण्डितों को प्रशिक्षित किया। यों वे अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे किन्तु वेद, संस्कृत तथा शास्त्रों में उनकी गहरी गति थी। उन्होंने वेद मन्त्रों के जैसे लोकोपयोगी अर्थ किये हैं, उनसे वैदिक स्वाध्याय में लोगों की रूचि बढ़ी है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का भाष्य इसी कोटि की रचना है।

वेदाध्ययन और लेखन में प्रवृत्त होने के अलावा उन्होंने बंगाल आर्यसमाज की गतिविधियों और विकास को लक्ष्य बनाकर कोलकाता आर्यसमाज का इतिहास, आर्यसमाज के विद्वान और शस्त्रार्थ आदि अनेक शोधरक ग्रन्थ लिखे हैं। सत्यार्थप्रकाश दर्पण सत्यार्थप्रकाश जानकारियों का विश्वकोष ही है।

उपाध्यायजी बहुभाषा विज्ञ थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगाल में उनकी निर्बाधगति थी। उनके उन्होंने बंगाली ग्रन्थ भी लिखे हैं। निरन्तर आधी शताब्दी तक कलकत्ता आर्य समाज के मासिक पत्र आर्य संसार का सम्पादन कर उन्होंने आर्य पत्रकार जगत् में एक मानदण्ड स्थापित किया है। लेखन के साथ उपाध्याय जी ने वाणी द्वारा भी वैदिक धर्म का भूमण्डल स्तर पर प्रचार किया था। एक सात्विक, समर्पित तथा सुशिक्षित विद्वान का आर्य बौद्धिक जगत् से विदाई लेना एक महती तथा अपूरणीयक्षति है। - 315, शंकर कॉलोनी, श्री गंगानगर

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

यज्ञ द्वारा समस्त रोगों का उपचार

❒ वैद्य श्री गजानन्द व्यास आयुर्वेदाचार्य

वर्तमान युग में नाना प्रकार के नित्य नवीन प्राणघातक असाध्य रोगों का प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। इस प्रवाह से बचने के लिए संसार के वैज्ञानिकों द्वारा अथक परिश्रम किया जा रहा है, कुछेक रोगों से बचने के लिए सूचीवेध (टीकाकरणों) के आविष्कार हुए हैं, पर ये निर्दोष नहीं हैं, इनसे रूग्णों के शरीर पर विपरीत प्रभाव भी पड़ता देखा जाता है।

यदि हम मुड़कर देखें तो ज्ञात होगा कि सृष्टि के आदि से लेकर अब तक हवन (यज्ञ) का प्रचार समस्त संसार में रह चुका है। भारत में वेदों, उपनिषदों, धर्मशास्त्रों व आयुर्वेद-शास्त्रों में स्थान-स्थान पर यज्ञ-चिकित्सा की महिमा का वर्णन मिलता है। कुछेक पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों ने भी हवन-चिकित्सा के सिद्धान्तों को स्वीकारा है। यवन देशों के तत्त्ववेत्ता प्यूयकी ने अग्नि को वायु-शोधक माना है। जापान, चीन में होम को धोम कहते हैं, वे भी मन्दिरों में धूप जलातें है। पारसी लोगों के बारे में सभी जानते हैं कि ये अग्नि के उपासक हैं।

वर्तमान में हमारे देशवासियों की ऐसी मानसिकता बन गई है कि पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा जो कुछ भी भला-बुरा कहा जाता है उसे ही देववाणी समझ कर अन्धानुकरण करने में अपनी भलाई समझ बैठे हैं। अत: कुछेक पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने यज्ञ-चिकित्सा की सार्थकता समझते हुए अपने उद्‌गार प्रकट किये हैं। यथा **''विज्ञान का नियम है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली होता है।''** यज्ञसामग्री अग्नि के स्पर्श से सूक्ष्मतम होकर हमारे शरीर में प्रविष्ठ कर रोगों के सूक्ष्म-कीटाणुओं (वायरस, बैक्टीरिया) को नष्ट करती है। फ्रांस के रसायनवेत्ता मि. त्रिले ने सिद्ध किया कि लकड़ी जलाने से, 'फार्मिक आल्डीहाईड' नामक गैस निकलती है। जो हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म कृमियों (वायरस) को नष्ट करती है। वर्तमान में यह गैस बाजार में ''फार्मोलिन'' नाम से विक्रय होती है, जो मकानों को कृमिहीन करने में काम आती है। मि. त्रिले ने यह भी सिद्ध किया कि शक्कर जलाने से जो गैस निकलती है वह भी सूक्ष्म से सूक्ष्म रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने में काम आती है। फ्रांस के ही प्रो. टिलबर्ट ने सिद्ध किया है कि खाण्ड जलाने से हैजा, तपेदिक, चेचक आदि के कीटाणु शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। प्रो. टाटलिट ने सिद्ध किया है कि मुनक्का, किशमिश आदि जलाने से आन्तरिक ज्वर (टाईफाईड) के कीटाणु आधे घण्टे में ही नष्ट हो जाते हैं। प्रो. हेमक्रिम ने सिद्ध किया कपूर व घी जलाने से रोग के कृमि शीघ्र नष्ट होते हैं। वास्तव में जिन सिद्धान्तों को लाखों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य ऋषियों ने प्रतिपादित किया था वे ही आज भी पाश्चात्य विज्ञान से भी सत्य सिद्ध हो रहे हैं।

यज्ञ एक वैज्ञानिक कृत्य है, समस्त कार्य उसकी सम्मति से होना चाहिए जो इस विज्ञान को समझता है। अत: यज्ञसामग्री द्वारा निकलने वाली गैस हमारे लिए नुकसान-कारक नहीं है। अपितु अन्न फलादि की अधिक उत्पत्ति में भी सहायक है। गीता में, भगवान ने स्पष्ट किया है-सम्पूर्ण प्राणी अन्न से पैदा होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है और वृष्टि यज्ञ से होती है।

कुछेक विद्वानों को यह भ्रान्ति हो रखी है कि कीटाणुवाद के प्रतिपादक पाश्चात्य वैज्ञानिक ही हैं, पर यह उनकी नासमझी है। अथर्ववेद, ऋग्वेद में सूक्ष्म से सूक्ष्म कृमियों का वर्णन किया गया है (अथर्व. 2.31.2)। दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले (वायरस) कृमियों को नष्ट कर दिया है। इसी प्रकार क्षय रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने का वर्णन है-अ.का.3, सू. 11 मं 1, का 3 सू. 11-मं 2.3. 4, अ. का 7 सू. 76 मं. 3-4 आदि ऐसे ही चेचक, अपस्मार, कामला, उपदंश आदि अनेक रोगों की कीटाणुओं का वर्णन मिलता है। रोगों की कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ-चिकित्सा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय बतलाते हुए नित्य हवन करने पर जोर दिया गया है। यदि कोई शंका करे कि आयुर्वेद का आधार त्रिदोषज्ञ है तो फिर कीटाणुवाद से इसका तादात्म्य कैसे? यूँ तो ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में स्थान-स्थान पर कीटाणुओं से होने वाले रोगों का वर्णन मिलता है, जो अकाट्य व शाश्वत सत्य हैं। पर सामान्य ज्ञानानुसार वातादि धातुएँ जिस किसी कारण से विकृत हों तो दोषज्ञ हो जाते हैं, ये ही दोष आगे जाकर पाचनक्रिया को अनियमित कर कीटाणुओं की उत्पत्ति कराते हैं।

पदार्थ-विज्ञान का नियम है कि वस्तु का नितान्त अभाव नहीं होता, केवल आकार परिवर्तित होता है। अत: यज्ञ-अग्नि में डाले गये पदार्थ नष्ट नहीं होते, बल्कि औषधियों के परमाणु सूक्ष्म हो शक्तिशाली हो जाते हैं तथा वे सूक्ष्म परमाणु हमारे शरीर में श्वास द्वारा पहुँचकर अंगों को पुष्ट करते हैं तथा वहाँ स्थित कीटाणुओं को नष्ट करते हैं जैसा कि वेद भगवान् ने बतलाया है (अथर्व. 1.2.2.)

यहाँ संक्षेप से प्रत्येक रोग के निवारण के लिए किन-किन वस्तुओं को हवन-सामग्री के रूप में लिया जाना चाहिए, जैसा वर्णन मिलता है, संक्षेप से इस प्रकार है-

1. मलेरिया नाशक सामग्री- (क) गूगल, गिलोय, तुलसी के पत्ते, अतीस, जायफल, चिरायता प्रत्येक समभाग। (ख) पांडरी, शालपर्णी, ब्राह्मी, मकोय, गुलाब पुष्प, काकोली, लोंग, मुलहठी, हाऊबेर, कपूर, काकोणि, ऊद, अस्पंद, सहोड़ा छाल, अकरकरा प्रत्येक समभाग। (ग) देशी शक्कर 8 गुण। घृत यथोचित मात्रा।

2. मधुमेहनाशक सामग्री- (क) हर्र बड़ी, गुठली रहित बहेड़, आंवला, तिल, गिलोय, श्वेत चंदन, बादाम, सुगन्धो को किला, जामुन की गुठली, गुड़मार, बेल के पत्ते, गूलर की छाल, शहद-समभाग। (ख) गूगल-'क' भाग से दूगनी।

3. चर्मरोग नाशक सामग्री- (क) ब्राह्मी, सत्यानाशी, नीम के पत्ते, गिलोय, चिरायता, गंधक, कपूर, शहद-समभग। (ख) गूगल, सुगन्धबाला, हाऊबेर। 'क' भाग से दुगना।

4. (श्वास) दमानाशक सामग्री- (क) त्रिफला, अगर, तगर, जटामांसी, यष्टी, मून्नका-1 ग्राम। (ख) गूगल, गिलोय, बिसोहा, दुगुना। (ग) कपूर देशी आधा भाग, देशी शक्कर, 2.5 गुना।

5. संग्रहणी नाशक सामग्री- (क) सफेद जीरा, काला जीरा, बेल का गुदा, सोंठ, पीपल धनियां, सुगन्धबाला, नागर-मोथा, अजवायन, इन्द्रजौ, चिरायता, शालपर्णी, पृष्टपणी, गोखरू, लोंग, तेजपत्ता, हरड़, बहेड़ा, ऑवला, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, वंशलोचन, बादामगिरी, नारायणगिरी, छुहारा, शीतल चीनी, बड़ी इलायची, समभाग, 1 भाग। (ख) गुगल, पुराना गुड़ 4 गुणा।

ऋतुअनुसार हवन सामग्री

बसन्त ऋतु- (क) चिरायता, श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, जायफल,

कमलगट्टा, कपूर काचरी, इन्द्र जौ, शीतल चीनी, तालिसपत्र, तुलसीपत्र, अगर-तगर मजीठ, 1 भाग। (ख) धूप का बुरादा, देवदारू, गिलोय, मुनक्का, गुलरत्वक, सुगन्धबाला, हाऊबर-2 भाग। (ग) गुगल-देशी शक्कर 10 भाग। (घ) जावित्री 1/4 भाग-केशर 1/8 भाग।

ग्रीष्म ऋतु- (क) आँवला, जटामांसी, नागरमोथा, वायाविडंग, धरीला, दालचीनी, लौंग, चन्दन द्वे, अगर, तगर, मजीठ, बड़ी इलायची, धूप बुरादा, तालिसपत्र, उन्नाव प्रत्येक 1 भाग। (ख) गुलाब पुष्प, चिरौंजी, शतावर, खस, गिलोय, सुपारी-दो भाग। (ग) गुग्गल-देशी शक्कर 10 भाग। (घ) केशर 1/8 भाग।

वर्षा ऋतु- (क) काला अगर, इन्द्र जौ, धूप का बुरादा, तगर, तेजपत्र, बेल का गुदा, गिलोय, तुलसी, विडंग, नागकेशर, चिरायता। (ख) देवदारू, राल, खोपरा, जायफल, जटामांसी, वच, सफेद चन्दन, छुहारा, नीम के पत्ते, मकोय पंचाग, सुगन्ध कोकिला प्रत्येक 2 भाग। (ग) देशी शक्कर-8 भाग, गुगल, 10 भाग (घ) छोटी इलायची, 1/2 ग्राम, केशर 1/8 भाग।

शरद् ऋतु- (क) चन्दन लाल, चन्दन श्वेत, नागकेशर, गिलोय, दालचीनी, पित्तपापड़ा, मोचरस, अगर, इन्द्र जौ, अश्वगंध, पत्रज, शीतल चनी, तालमखाना, धान की खील प्रत्येक 1 भाग। (ख) गूग्गल, चन्दन पीला, चिरौंजी, गूलर की छाल, पीली सरसों, कपूर काचरी, जायफल, चिरायता, जटामांसी, सहदेवी 21/2 भाग। (ग) किशमिश 5 भाग, देशी शक्कर 8 भाग। (घ) केशर 1/2 भाग।

शिशिर ऋतु- (क) कपूर, विडंग, इलायची बड़ी, मुलहटी, मोचरस, गिलोय, तुलसी, चिरौंजी, काकड़ा सिंगी, शतावर, दारु हल्दी, पद्मभाख, सुपारी 1 भाग। (ख) अखरोट गिरी, मुनक्का, काले तिल, रक्तचन्दन, चिरायता, छुहारा, जटामांसी, तम्बारू, 21/2 भाग। (ग) गूगल 5 भाग, देशी शक्कर 8 भाग। (घ) रेणुका, शंखपुष्पी, कौंचबीज-1/2 भाग।

हेमन्त ऋतु- (क) काली मूसली, पित्त पापड़ा, कूठ, गिलोय, दालचीनी, जावित्री, मुश्क, तालीसपत्र, तेजपत्र, श्वेत चन्दन, प्रत्येक एक भाग। (ख) देशी कपूर, कपूर काचरी, मुन्नका, अखरोट-मिंजी, काले तिल, खोपरा गोला, सुगन्ध कांकोली, हाऊबेर गुगुल 10 भाग, देशी शक्कर 8 भाग, रास्त्रा 1/2 भाग केशर 21.8 ग्राम।

हवन के लिए समिधा के विषय में भी परामर्श दिया गया है कि अगर निम्नलिखित समिधा ली जायें तो कई गुणा फल मिलता है-

अर्क, पलाश, खादिर, अपामार्ग, अश्वत्थ (पीपल) औदुम्बर, शमी, दुर्वा, दर्भ, आम्र-बिल्व-चन्दनादि काष्ठ। स्वस्थ मनुष्य की स्वस्थता बनाये रखने के लिए दैनिक यज्ञकर्म में 100-500 आहूतियां दी जानी चाहिएं। इस प्रकार यदि वैदिक साहित्य का अध्ययन किया जाये तो ऐसा कोई रोग नहीं जिसका उपचार वहाँ न प्राप्त हो। यदि प्राचीन ऋषियों के समान आधुनिक समाज में भी यज्ञाग्नि के प्रति निष्ठा तथा श्रद्धा हो तो ऐसा कभी नहीं हो सकता कि ऋषि ने किसी रोग को दूर करने के लिए कोई विधि या यज्ञ-सामग्री लिखी हो और कोई व्यक्ति श्रद्धापूर्वक, विधिपूर्वक यज्ञ को करे ओर रोग दूर न हो। बात केवल श्रद्धा विश्वास और विधि की है। - आबू पर्वत (राजस्थान)

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

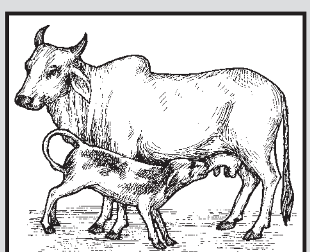

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

पुस्तक समीक्षा

समीक्षक- डॉ. रघुवीर वेदालंकार पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

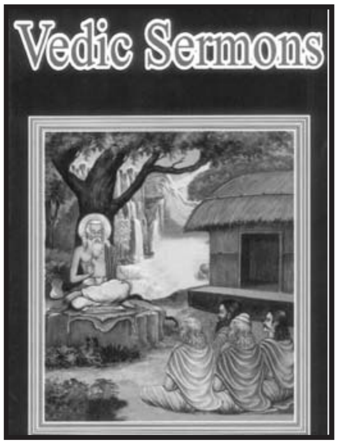

लेखक- श्री कृष्ण चोपड़ा

प्रकाशक- कृष्ण चोपड़ा फ्राऊडक्शन मर्यादा

38 A Lovelace Avenue, Sali Hall, B-91, ZTR, U.K.

प्रकाशनार्थ 2013, मूल्यः $ 07.00 or E 06.00

प्राप्ति स्थानः धूडमल प्रहल्लाद कुमार धर्मार्थन्यास हिण्डोन सिटी, राजस्थान

श्री कृष्ण चोपड़ा जी ने इस पुस्तक में वेदों के चुने हुए मन्त्रों की व्याख्या अंग्रेजी में की है। मूल वेद मन्त्र, उसका रोमन स्वरूप, मन्त्र का शब्दार्थ तथा कारण, इस क्रम से लेखक ने पुस्तक में मन्त्रों की व्याख्या की है। छपाई अति उत्तम तथा शुद्ध है। मन्त्र सस्वर तथा शुद्ध दिये गये हैं। लेखक हिन्दी तथा संस्कृत के विद्वान है। मन्त्रों का शब्दार्थ उचित रीति से किया गया है तथा व्याख्या भी हृदय गाहिणी है। पुस्तक में मन्त्र चयन भी अति उत्तम तथा विभिन्न विषयों से सम्बन्धित है। कुल 125 मन्त्रों की व्याख्या पुस्तक में की गयी है, किन्तु व्याख्या के प्रसंग में अन्य भी आए मन्त्र उपस्थित कर दिये गये हैं। लेखक यास्काचार्य, महर्षि दयानन्द, भगवद्गीता, उपनिषद् आदि को भी उद्धृत करते हैं। इससे ग्रन्थ की प्रामाणिकता एवं रोचकता में अभिवृद्धि हुई है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में भूमिका में ऋषि, देवता, स्वर, वेदों की मन्त्र संख्या आदि को भी स्पष्ट किया गया है। पुस्तक में व्रत, परमेश्वर, संसार, चतुवर्ण, राष्ट्र, धनकाल, दान, दीर्घायु, सामनस्य, पाप, वाणी, श्रद्धा, पुरुषार्थ, उपासना, त्रैतवाद, यज्ञ, कर्मफल, संस्कृति, विद्या अविद्या, मन, जगदुत्पति, शरीर आदि से सम्बन्धित मन्त्रों का चयन करके इनकी उत्तम व्याख्या की गयी है जिसके पढ़ने से पाठक ऊबता नहीं है। दृष्टा के माध्यम से व्याख्या को रोचक भी बना दिया गया है।

शब्दार्थ मात्र तक सीमित न रहकर मन्त्र के कथ्य तक लेखक की पहुंच है। यथा अक्ष सूक्त दिनांक (10/34.13) में आए हुए 'कृषि' शब्द की व्याख्या (Hard Labour) कठोर परिश्रम के रूप में की गयी है, जो सर्वथा उपयुक्त है। इसी तरह लॉटरी आदि को भी जुए की श्रेणी में रखना उचित ही है। कठोर परिश्रम ही मानसिक शान्ति तथा वौद्धिक पवित्रता प्रदान करेगा। It will provide purity of mind method place and internal happiness P 38. इसी प्रकार यजु (35.10) के अश्मन्वती रीयते की व्याख्या में लेखक लिखता है। First journey is full of hazards and struggles मन्त्र का यही भाव है।

यह अंग्रेजी कारका है तथा अंग्रेजी भाषा का ही यह दोष है कि इसमें संस्कृत के कुछ शब्दों के लिए शब्द ही नहीं है। यथा मन। अंग्रेजी में इसका अनुवाद ही mind किया गया है जो उपयुक्त नहीं है। मन तथा मस्तिष्क स्वरूप तथा कार्य की दृष्टि से भिन्न-भिन्न है। इसी प्रकार पृष्ठ 86 पर ऋ 10.71.2 के धीरा का अर्थ wise किया गया है। यह 'धीर' पर के स्वास्थ्य का सूचक नहीं है। यास्क कहते है-धीतः प्रज्ञानवत्तो ध्यानवन्तः। wise का अर्थ केवल बुद्धिमान है जबकि धीरा का अर्थ प्रकृष्ट ज्ञान वाले ध्यानी जन। यह ज्ञान ध्यान की अवस्था में श्री प्राप्त होता है। यह सामान्य ज्ञान से अतिरिक्त है। यह 144 पर वायु का अर्थ Soul भी कुछ इसी प्रकार का है। महर्षि दयानन्द आदि ने इसका अर्थ प्राणवायु किया है। इसी प्रकार पृष्ठ 92 पर श्रद्धा का अर्थ Faith भी ऐसा ही है। Faith का अर्थ विश्वास है। विश्वास के पश्चात् श्रद्धा उत्पन्न होती है जो हृदय का अर्थ है। पृष्ठ 63 पर कालो अश्वो भी ऐसा ही है। यह अंग्रेजी का Horse नहीं है, अपितु अशूड्, ब्याप्तौ' धातु से बना है। यह काल का विशेषण है। अर्थ है-अति शीघ्रगामी सर्वत्रव्याप्त काल। इसी प्रकार का एक पृष्ठ 35 पर 'युवा' है। इसका अर्थ भी young नहीं है। परमेश्वर शरीर रहित=अकायम है तो young कैसे हो सकता है। यह न्यू मिश्रणामिश्रयायोः धातु से बना है। जो परमेश्वर हमें दुःखों से छुड़ाता तथा सुःखों को प्राप्त कराता है। इसी प्रकार 'सूक्त' का अर्थ भी Chapter न होकर सु+उत्तम=उत्तम रीति से कहा गया है। ये सब अंग्रेजी भाषा की न्यूनताएं है जिस कारण वैदिक शब्दों के स्वारूप को अंग्रेजी के माध्यम से स्पष्ट किया ही नहीं जा सकता। इससे लेखक के वैदुष्य में कोई न्यूनता नहीं आती।

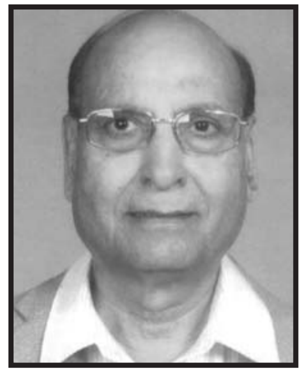

Krishan Chopra

कृष्ण चोपड़ा जी ने भी वैदुष्यपूर्ण ढंग से सभी मन्त्रों की व्याख्या की है। यथा-म. 102 पर सुगन्धिम का अर्थ Whose families is spread through out the .... पढ़कर हृदय आनन्दित हो जाता है। इसी प्रकार पृष्ठ 58 पर इज का अर्थ भी बहुत अच्छी तरह प्रकट किया गया है। पृष्ठ 226 पर पिता का अर्थ protector from all the calamities of the world भी बहुत सुन्दर है। पृष्ठ 98 पर उदधृत सूर्याचन्दमसौ पृथक-पृथक को शब्द न होकर समासयुक्त एक ही शब्द है। अतः अलग-अलग व्याख्या नहीं होगा।

श्री कृष्ण चोपड़ाजी दयानन्द ब्रह्म महा विद्यालय हिसार के स्नातक तथा विद्वान व्यक्ति हैं। मैं उन्हें उस उत्तम व्याख्या के लिए साधुवाद देता हूं। पुस्तक प्रचारित होने योग्य है। अंग्रेजी पढ़े-लिखे, विशेषतः पाश्चात्य विद्वान जिन मन्त्रों पर हिंसा, अश्लीलता आदि का निरर्थक आश्रय करते हैं, उनके लिए ऐसे मन्त्रों की अंग्रेजी व्याख्या की जा सके तो उत्तम रहेगा। इस पुस्तक का प्रचार-प्रसार भी अंग्रेजी पढ़े व्यक्तियों में ही हो तो उन्हें वेदज्ञान का पता चल सकेगा। हिन्दी भाषा में इन मन्त्रों की व्याख्या उपलक्ष्य है ही।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

www.tankara.com पर उपलब्ध है

समाचार दर्पण

वैदिक ज्ञानार्जन एवं संस्कार यात्रा

डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के यशस्वी प्रधान 'श्रीमान पूनम सूरी जी' की प्रेरणा तथा डॉ. निशा पेशिन जी निदेशिका डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के मार्ग दर्शन एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रि. चित्रा नाकरा जी की अध्यक्षता में तथा नीरज ज्योति जी के संयोजकत्व में **वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, नई दिल्ली** के 27 प्रतिभा सम्पन्न छात्रों ने अपने विद्वान आचार्यो के सानिध्य में 'वैदिक ज्ञानार्जन एवं संस्कार यात्रा से अपनी संस्कृति, संस्कारों, मूल्यों से जुड़ने का गहराई से प्रयास किया। इस संस्कार यात्रा ने दिल्ली से चलकर अपना केद्र हरिद्वार स्थित तपपूत 'वैदिक मोहन आश्रम' को बनाया, ऋषिवर दयानन्द जी के विचार एवं तपोभूमि (पाखंड खंडिनी पताका) को देख कर तथा अपने आचार्यो के मुखारविन्द से ऋषिवर की क्रांतिकार जीवन कथा को सुनकर छात्रगण भाव विभोर हो गये। इस अवसर पर छात्रों को आध्यात्म की दिव्य दुनिया में प्रवेश करने का आसीम सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस यात्रा में छात्रों ने पर्वतों की रानी मसूरी के मनोहर दृश्यों का अवलोकन किया। आचार्यकुलम में छात्रों ने कुलम के मेधावी छात्रों से साक्षात्कार किया। पतंजलि योगपीठ में आयुर्वेद के प्रख्यात आचार्य 'श्री बालकृष्ण जी' से आशीर्वाद तथा वैदिक साहित्य प्राप्त किया। वैदिक मोहन आश्रम में छात्रों ने प्रतिदिन यज्ञ, हवन, भजन, प्रवचन तथा शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए अपने विद्वान गुरुजनों के साथ-साथ प्रि. धनीराम जी, प्रिं. पी.सी. पुरोहित जी, श्रीमती अनीता स्नातिका जी तथा श्री कपिल शर्मा जी से मार्ग दर्शन प्राप्त किया।

आर्य समाज नोएडा का निमन्त्रण

आर्य समाज नोएडा एवं आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा का वार्षिकोत्सव भव्य वार्षिकोत्सव आर्य समाज बी-69 सेक्टर 33 नोएडा के प्रांगण में दिनांक 17 से 21 दिसम्बर 2014 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रभात फेरी, वेद कथा एवं भजन सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, विश्व शान्ति सौहार्द सम्मेलन, गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन आदि का आयोजन किया जायेगा। उक्त कार्यक्रमों में डॉ. अशोक कुमार चौहान, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. सत्यपाल सिंह, श्रीमती विमला बाथम, स्वामी प्रणावानन्द, स्वामी आर्यवेश, स्वामी विश्वानन्द, डॉ. सोमदेव शास्त्री, श्री भानुप्रकाश शास्त्री, आदि विद्वान, सन्यासी, आर्यनेता एवं राजनेता पधार रहे हैं। आर्य जनों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में उक्त समारोह में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

भजन सीडी का लोकार्पण

लेफ्टिनेंट जनरल श्री ए.एस.रावत (सी.एम.एम., जबलपुर) द्वारा नगर की प्रतिभाशाली गायिका, आकाशवाणी कलाकार एवं आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में भजनों के माध्यम से सहयोग देने वाली स्वर साधिका इंजी. कु. विदुषी सोनी की सीडी ''परमपिता तो एक है'' भजन संग्रह का लोकार्पण गत दिवस **आर्य समाज नेपियर टाउन, जबलपुर** में सम्पन्न हुआ। इस सीडी के गीतों की रचना उनकी नानीजी श्रीमती सरोज वर्मा तथा मार्गदर्शन कु. विदुषी सोनी गुरु श्री प्रकाश वेरूडकर द्वारा दिया गया है।

34वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दयानन्द मठ चम्बा का 34वां वार्षिकोत्सव स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में चलता रहा। यज्ञ में मन्त्रपाठ दयानन्द आदर्श विद्यालय की कन्याओं के द्वारा किया गया। पं. हरीश मुनि जी के भी भजन होते रहे। उपदेश स्वामी सुमेधानन्द जी के द्वारा होता रहा। 14वां शारद यज्ञ लगातार 27 घण्टे चलता रहा। वेदपाठ आदर्श विद्यालय की कन्याओं द्वारा तथा संगीत का कार्यक्रम विद्यालय की संगीताचार्य तथा पं. हरीश मुनि जी द्वारा होता रहा। अमृतसर से आए श्री हेमराज जी के भी भजन बीच-बीच में होते रहे। प्रवचन बीच-बीच में स्वामी सुमेधानन्द जी के द्वारा तथा दिल्ली से आए स्वामी आर्यवेश जी द्वारा सम्बोधन होता रहा। इस सारे कार्यक्रम में विशेषता यह रही। कि आदर्श स्कूल की कन्याओं के द्वारा किया गया वेदपाठ अपने आप में अद्‌भुत था।

47वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नीदड़ (जयपुर) का 47वां वार्षिकोत्सव पांच सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक सत्र में यज्ञ-भजन एवं विद्वानों के प्रवचन हुए।

डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में वेदपाठ डॉ. संदीपन आर्य व श्रुति शास्त्री ने किया। इस अवसर पर समधुर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक टीकम सिंह आर्य एवं स्थानीय सर्वश्री जवाहर लाल वधवा तथा मेहरा दम्पति के हुए। पूर्णाहुति सत्र को सर्वश्री एम. एल. गोयल अशोक शर्मा, डॉ. कृष्णपाल सिंह व सी.एम. शर्मा ने संबोधित किया। नीदड आर्य समाज के प्रधान पं. भगवान सहाय विद्या वाचस्पति ने संस्था की स्थापना एवं प्रगति विवरण पर प्रकाश डाला।

संगीतमय वेदकथा का आयोजन

आर्य समाज मानटाउन एवं महिला आर्य समाज सवाई माधोपुर के संयुक्त तत्वाधान में सामवेद परायण यज्ञ, भजन उपदेश एवं संगीतमय वेदकथा का आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक प्रवक्ता, विद्वान सन्यासी गुरुकुल की आचार्या इत्यादि पधारे। कार्यक्रम का शुभारम्भ चेयरमैन नगर परिषद ने ध्वजारोण के साथ किया। इस कार्यक्रम की मुक्त वक्ता एवं कथा वाचक ब्रह्मचारिणी बहिन सविता आर्य (मथुरा) रही एवं बहिन स्मृति आर्य (दिल्ली) एवं प्रतिभा आर्य ने सरस्वर मधुर मन्त्रोचारण करते हुए सामवेद पारायण सम्पन्न कराया।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

प्रो. (डॉ.) सत्येन्द्र पाल सिंह व पुत्र-वधु श्रीमती वेद ज्योति ने दीपावली, पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती के श्रद्धांजलि दिवस, माँ भारती के अमर सपूतों राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी व भू.पू. प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादूर शास्त्रों जी की जयन्ति तथा अपने बाबा जी स्व. चौधरी हरख्याल सिंह की पुण्य-तिथि आदि की दृष्टि से माह-अक्टूबर को अति महत्वपूर्ण मानते हुए 'अपने' ग्रा-बिजरौज (जिला-बागपत), उत्तर प्रदेश में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का वृहत आयोजन किया।

आर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून की प्राचार्या डॉ. अन्नपूर्ण के ब्रह्मत्व में गुरुकुल की ब्रह्मचाणियों द्वारा प्रातः-सांय दो पारियों में यथा कार्यक्रमानुसार महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन **कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो** के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित किया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रफुल्ल लखानी एवं श्रीमती मीना लखानी थे। इस महायज्ञ में 250 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्यलाभ प्राप्त किया तथा हजारों श्रद्धालुओं ने विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण के लिए आहुतियाँ प्रदान की। समाज के यशस्वी प्रधान श्री अमर ऐरी जी एवं मन्त्री श्री यश कपूर जी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि उनकी विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से विशल जनसमूह मन्त्रमुग्ध हो गया।

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्द (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सानिन्ध्य में निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया ने भाग लिया। प्रातः काल श्रीरामभिक्षु एवं आश्रम के मन्त्री डाक्टर सुरेश जी साधकों को योगासन एवं प्राणायामादि का अभ्यास कराते थे और फिर उसके बाद पूज्य महात्मा क्रियात्मक योगाभ्यास करवाते थे। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रम्हत्व में सामवेद पारायण-यज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्यजी योगदर्शन का अध्ययन करवाते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

पुरुषोत्तम हिन्दी भवन में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित भव्य सम्मान समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार एवं यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को शाल, प्रतीक-चिह्न, ग्रंथादि भेंट कर 'सम्मानित साहित्यकार' के रूप में सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान पूर्व चुनाव आयुक्त श्री जी.बी.जी. कृष्णमूर्ति ने प्रदान किया। सम्मान के पूर्व डॉ. कथूरिया की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए पूर्व महापौर एवं दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कहा कि भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) में हिन्दी-विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रह चुके डॉ. कथूरिया ने माँ भारती की बहुत सेवा की है। वे प्रतिष्ठित समालोचक, सहृदय कवि, प्रखर चिन्तक, गंभीर निबंधकार, निर्भीक पत्रकार, निःस्वार्थ समाजसेवी, कुशल प्रशासक, उत्कृष्अ प्रवचनकर्ता, वैदिक विद्वान, शिष्यवत्सल प्राध्यापक एवं कृतकार्य प्रोफेसर हैं।

निर्माण उत्सव आयोजित

आर्य केन्द्रीय सभा, पानीपत के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का निर्वाण दिवस आर्य समाज मॉडल टाऊन में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य वेद प्रवक्ता आचार्य विषणु मित्र ने कहा यदि हम जीवन को उत्थान चाहते हैं तो हमें वेद मार्ग पर चलना चाहिए। हमें महिलाओं को पूरा अधिकार देना चाहिए। स्वामी जी के अथक प्रयास से आर्य समाज की महिलाएं ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन है। आचार्य सुपुत्र सामश्रमी ने कहा कि हमें अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ाना चाहिए। श्री कुलदीप आर्य भजनोपदेशक ने मन-मोहक तथा क्रान्तिकारी भजनों से ऐसा समय बांधा कि सारी जनता मन्त्रमुगध हो गई। यज्ञ के ब्रह्मा आयार्य संजीव कुमार ने वेद मन्त्रों द्वारा यज्ञ करवाया।

आभार

गत 11 सितम्बर 2014 को मुझ पर हार्ट अटैक का आक्रमण हुआ था। समादरणीय श्री अजय सहगल जी ने यह सूचना टंकारा समाचार पत्रिका में प्रकाशित की थी। देश-विदेश के सैकड़ों आर्य भाईयों-बहनों ने अपनी शुभ मंगल कामनाएं भेजी तथा मेरे स्वास्थ्य लाभ हेतु ईश्वर से प्रार्थनाएं की। आर्य समाजों तथा मेरे शुभ चिन्तकों ने इलाज के लिए आर्थिक सहायता भी भिजवाई। चार दिन तक फोर्टिस ऐस्कर्ट हस्पताल अमृतसर में भर्ती रहा। शरीर में दो स्टण्ड पड़े हैं। अतः शारीरिक कमजोरी काफी आ गई है। परमेश्वर की कृपा से तथा आर्य जनों की शुभ कामनाओं से अब मैं घर पर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहा हूँ। पहले से ठीक हूँ। सभी आर्य बहनों भाईयों का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

- सत्यपाल 'पथिक'

वैदिक पूर्णिमा सत्संग संपन्न

सत्संग के माध्यम से सत्य और असत्य की पहचान होती है तथा कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेक सत्संग से ही संभव है। उक्त विचार श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने **आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा, राजस्थान** में आयोजित पूर्णिमा वैदिक सत्संग समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारंभ आर्य विद्वान व डी.ए.वी. स्कूल के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ किया गया। यज्ञ में सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ आहूतियां प्रदान की। आर्य समाज विज्ञाननगर के मन्त्री राकेश चड्ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि आज विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज में भी संगत और पंगत में कोई भेदभाव नहीं होता। ईश्वर की नजर में सब समान हैं। आर्य विद्वान पंडित शोभाराम ने कार्तिक पूर्णिमा के महत्व की जानकारी दी। आर्य विद्वान डॉ. के.एल. दिवाकर एवं आर्य समाज के प्रधान जे.एस. दुबे ने सत्य अपनाने एवं सत्य पर चलने की प्रेरणा दी। यज्ञ में मुख्य रूप से श्रीमती पूनम चड्ढा, श्रीमती विमला शर्मा, श्रीमती उषा छाबड़ा, श्रीमती अनीता शर्मा, श्रीमती पवन कौर, श्रीमती अलका मेहता, सुरी साक्षी यजमान के रूप में आहूतियां अर्पित की। संचालन आर्य समाज के मन्त्री राकेश चड्ढा ने किया।

पाँच दिवसीय वेद कथा का समापन

''वेद प्रचार समिति'' कच्छ गुजरात द्वारा वेद कथा का आयोजन भुज के निकट माधापर गांव में किया गया था। इस कथा का वाचन संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर के आचार्य स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती के द्वारा किया गया। इस कथा के मुख्य यजमान श्रीमती हंसाबेन भट्ट थीं साथ ही उनके परिवार जनों ने भी उनका महत्वपूर्ण सहयोग किया। इस कथा के संयोजक श्री शशीकान्तभाई पटेल ''विश्व हिन्दु परिषद'' सौराष्ट के मन्त्री रहे तथा उनके पुत्र सार्थक जी एवं उनकी पूरी टीम ने और गायत्री परिवार के सदस्य श्री वालजीभाई जी, एन.के. मोदी जी आदि कार्यकर्ताओं ने कथा को सफल करने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस कथा में मंच संचालन श्री शशीकांत भाई द्वारा सुन्दर ढंग से सम्पादित किया गया।

ભારતના પ્રાચીન પાંચ વૈજ્ઞાનિકો

રમેશ મહેતા મો. ૦૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ / Email:- pt.rammehta@gmail.com

લગભગ ૫૦૦૦ વર્ષ પહેલા ગીતા (૨-૧૬) મુજબ नासतो विद्यते न भावे विद्यते सतः અર્થાત જે સ્થાયિત્ત્વમાં છે એનો ક્ષય નથી થતો, અને જે વિદ્યમાન નથી એનો જન્મ પણ નથી થતો. ઉપરોક્ત સિદ્ધાન્ત લૉ ઑફ કન્જર્વેશન ઑફ એનર્જીના નામે પણ ઓળખાય છે. મનુસ્મૃતિ મુજબ પ્રકૃતિમાંથી આકાશ, આકાશમાંથી વાયુમંડળ, વાયુમંડળમાંથી પ્રકાશ, પ્રકાશમાંથી ઊર્જા, એમાંથી જળ અને જળમાંથી બધા જીવોનો આવિર્ભાવ થયો છે.

ઈ. સ. પૂર્વે ૩૫૦-૨૯૦ વર્ષ પૂર્વે યૂનાની રાજદૂત મૈગસ્થની સમ્રાટ ચન્દ્રગુપ્તના દરબારમાં આવ્યા હતા. સ્વદેશ જઈને એમણે ' ઇન્ડિકા' નામનું પુસ્તક લખીને ભારતની તત્કાલીન સમૃદ્ધિ, રાજનૈતિક તથા પ્રશાસનિક પરિસ્થિતિઓ, બુદ્ધધર્મના પ્રચાર તથા હર્ક્યુલિસની ભારતયાત્રા વિષયની પોતાના સ્વદેશવાસિઓને જાણકારી આપી હતી.

પાંચમી શતાબ્દીના પ્રથમ ચરણમાં ચીની રાજદૂત ફાહ્યાન ભારતીય રાજા ચંદ્રગુપ્ત વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયના દરબારમાં આવ્યા હતા. એ કપિલવસ્તુ, લંકા તથા મગધમાં રહ્યા હતા. અહીં રહીને તેમણે બૌદ્ધ ગ્રંથોનો ચીની ભાષામાં અનુવાદકરીને પોતાની સાથે લઈ ગયા હતા. એમના લેખો પરથી પ્રેરણા લઈને પ્રસિદ્ધ ચીની ઉપન્યાસ જર્ની ટુ દી વેસ્ટ અંગ્રેજીમા લખાયો હતો.

કોપરનિક્સ (૧૪૭૩-૧૫૪૩)ના પહેલા યૂરોપમાં ટાલમી અને બાઈબલના ખોટા બ્રહ્માંડના સિદ્ધાંત પ્રચલિત હતા. જ્યારે કે પાંચમી શતાબ્દીમાં જ નાલંદા વિશ્વવિદ્યાલયના ખગોળશાસ્ત્રિઓને ખબર હતી કે પૃથ્વી ગોળ છે અને પોતાની ધુરા પર ફરે છે. વૈદિક શાસ્ત્રોમાં દેશ, કાળ અને તત્ત્વોને લગતા કેટલાય સિદ્ધાન્તો છે જેને આજનું વિજ્ઞાન પણ માનવા લાગ્યું છે. પરંતુ મધ્યકાળમાં આ સિદ્ધાંતોનો પ્રચાર થાત તો આ નવા સમ્પ્રદાયોનું મુલ્ય ઓછું થઈ જાત એટલે એનો નાશ કરવાના સંભવિત દરેક જાતના પ્રયાસ થયા હતા. ભારતીય ખગોળશાસ્ત્ર અને ધર્મને લઈને મોગલો અને અંગ્રેજોના મનમાં પણ કડવાશ હતી. મૈકોલેએ આ જ્ઞાનને ભ્રમિત અને નષ્ટ કરવા માટેના ભરપૂર પ્રયાસ કર્યા હતા.

બૌદ્ધ અને ગુપ્ત કાળમાં ભારત પોતાના વૈદિક જ્ઞાનના બળના સહારે જ્ઞાનના ચરમ શિખરે હતું. પરંતુ મધ્યકાળના બર્બર આક્રાન્તાઓએ આ શિખરોને ધ્વસ્ત કરીને ઇતિહાસને ભૂંસી નાખવાના ભરપુર પ્રયત્નો કર્યા. તેમ છતા તેઓ સમ્પૂર્ણ સફળ નહોતા થયા. પ્રાચીન વૈજ્ઞાનિકોએ અંતરિક્ષના અનેક પાયાના સિદ્ધાન્તોનું પ્રતિપાદન કર્યું હતું. જેમાં પૃથ્વીની સૂર્ય ફરતે પરિક્રમા કરવાની અવધારણા, ચંદ્રગદ્રહણ અને સૂર્યગ્રહણ, ગુરુત્ત્વાકર્ષણનું બળ તથા ગ્રહોની ગતિની ગણના વિગેરે આવી જાય છે.

ઈસુ પૂર્વે સમ્રાટ વિક્રમાદિત્ય ભારતના મહાન સમ્રાટ હતા. એમના સમયમાં ઉજ્જૈન જ વિશ્વની રાજધાની હતી. પરંતુ વિક્રમાદિત્યના ઇતિહાસને જ ભૂંસી નખાયો છે. એમણે કરેલા મહાન કાર્યોના પૃષ્ઠોને પહેલા બૌદ્ધકાળમાં, પછી મધ્યકાળમાં ફાડી નાખવામાં આવ્યા. સમ્રાટ વિક્રમાદિત્યના કાળમાં ભારત વિજ્ઞાન, કળા, સાહિત્ય, ગણિત, નક્ષત્ર આદિ વિદ્યાઓનું વિશ્વ ગુરુ હતું. પછીથી ચંદ્રગુપ્ત, વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયના સમયમાં ભારતે ખગોળ શાસ્ત્રમાં ખૂબ જ ઉન્નતિ કરી.

ગુપ્તકાળમાં વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયે ઉજ્જૈનને ધરતી પરનું કાળગણનાનું કેન્દ્ર બનાવ્યું હતું. અહીંના જ્યોતિર્લીંગને એટલા માટે મહાકાળ કહ્યું હતું કે એ બરાબર કર્ક રેખાની ઉપર સ્થિત છે. ઉજ્જૈનને માનક સમયનું કેન્દ્ર બનાવીને ભારતીય ખગોળવિદોએ અનેકાનેક વેધશાળાઓ બનાવી હતી. એવા સ્તમ્ભ બનાવ્યા હતા કે જ્યાંથી સૂર્ય, ચંદ્ર અને નક્ષત્રોની ગતિ પર નજર રાખી શકાય. એમાંનો જ એક વિષ્ણુ સ્તમ્ભ આજે કુતુબ મીનારના નામે ઓળખાય છે.

માનક સમય એ છે કે જે કોઈ દેશ કે વિસ્તૃત ભૂ-ભાગની પ્રકૃતિ માટે સ્વીકૃત હોય. એ એ દેશના સ્વીકૃત માનક યામ્યોત્તર માટે સ્થાનીય માધ્ય સમય હોય છે. આપણા પોતાના સ્થાનના સમયને સ્થાનીય સમય કહેવાય છે. આનાથી આપણી સમય સંબંધી સ્થાનીય

સમય ક્ષેત્ર મુજબ સમયનું નિર્ધારણ થાય છે.

આવો જાણીએ ભારતના એ પાંચ ખગોળવિદોના નાંમ જેની ઉપલબ્ધિઓ અને જેમના દ્વારા નિર્મિત વેધશાળાઓને એટલા માટે ધ્વસ્ત કરી દેવામાં આવી, જેમના વિશ્વવિદ્યાલયો (નાલંદ અને તક્ષશિલા)ને બાળી નાખવામાં આવ્યા. કારણ કે રોમન, અંગ્રેજ, અને અરબના લોકોએ પોતાના કથિત નવાધર્મ અને રાજ્યની સ્થાપના કરી હતી. તેમછતાં સૌભાગ્યવશ ગણિત, વિજ્ઞાન, ખગોળશાસ્ત્ર, ચિકિત્સા તથા દર્શનશાસ્ત્રોના કેટલાય ગ્રંથ સુરક્ષિત રહી ગયા અને એ અરબી, અને સ્થાનીય ભારતીય ભાષાઓમાં અનુદિત થઈ ચુક્યા હતા. ભારતે આક્રાન્તાઓથી પોતાને ૫૦૦ વર્ષ સુધી બચાવીને રાખ્યું હતું પરંતુ છેલ્લે તે હારી ગયું એ પણ એવા લોકો સામે જે સ્વયં ભારતીય હતા. એ પાંચમાં વૈદિક ઋષિઓનો સમાવેશ નથી. ઉલ્લેખનીય છે કે અશ્વિન કુમાર અને ઋષિ ભારદ્વાજ પણ અન્તરિક્ષ વૈજ્ઞાનિક હતા.

વરાહ મિહિર (જન્મ- ઇ. સ. ૪૯૯, મૃત્યુ ૫૮૭) વરાહ મિહિરનો જન્મ ઉજ્જૈન પાસે કપિથા ગ્રામમાં થયો હતો. એમના પિતાનું નામ આદિત્યદાસ હતું. એમણે એનું નામ મિહિર એટલા માટે રાખ્યું હતું કે એનો અર્થ સૂર્ય થાય છે. કારણ કે એમના પિતા સૂર્યના ઉપાસક હતા. એમના ભાઈનું નામ ભદ્રબાહુ હતું. પિતાએ મિહિરને ભવિષ્યશાસ્ત્ર ભણાવ્યું હતું. કહેવાય છે કે મિહિરે રાજા વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયના પુત્રનું મૃત્યુ એના ૧૮માં વર્ષની આયુમાં થશે એવી સટીક ભવિષ્યવાણી કરી હતી.

આવી ભવિષ્યવાણીને કારણે મિહિરને રાજા વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયે બોલાવીને પરીક્ષા કરીને પોતાના દરબારી રત્નોમાં સ્થાન આપ્યું હતું. મિહિરે ખગોળ અને જ્યોતિષ શાસ્ત્રના ઘણા સિદ્ધાંત બનાવ્યા અને એના વિજ્ઞાનને દેશમાં આગળ વધાર્યું. આ યોગદાનને કારણે વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયે મિહિરને મગધદેશનું સર્વોચ્ચ સમ્માન વરાહ પ્રદાન કર્યું હતું. એ દિવસથી તેઓ વરાહ મિહિર પ્રસિદ્ધ થયા.

વરાહ મિહિર પહેલા આચાર્ય છે જેમણે જ્યોતિષશાસ્ત્રને સિદ્ધાંત, સંહિતા તથા હોરાના રૂપે સ્પષ્ટ રૂપ આપીને વ્યાખ્યાયિત કર્યા. એમણે ત્રણ સ્કંધોના નિરુપણ માટે ત્રણે સ્કંધો સાથે સંબંદ્ધ જુદા જુદા ગ્રંથોની રચના કરી. સિદ્ધાંત (ગણિત)- સ્કંધમાં એમની પ્રસિદ્ધ રચના છે - પંચસિદ્ધાંતિકા, સંહિતાસ્કંધમાં બૃહત્સંહિતા તથા હોરાસ્કંધમાં બૃહત્જાતક મુખ્ય રૂપે પરિગણિત છે.

કુતુબ મીનાર પહેલા વિષ્ણુ સ્તંભ તરીકે ઓળખાતો હતો. એ પહેલા એને સૂર્ય સ્તંભ કહેતા હતા. એના કેન્દ્રમાં ધ્રુવ સ્તંભ હતો જેને આજે કુતુબ મીનાર કહે છે. એની આજુબાજુ ૨૭ નક્ષત્રોના આધારે ૨૭ મંડળ હતા. એની રચના વરાહ મિહિરની દેખરેખમાં કરવામાં આવી હતી.

અજ્ઞાત બળ : આર્યભટ્ટના પ્રભાવને કારણે વરાહ મિહિરને જ્યોતિષમાંથી ખગોળશાસ્ત્રમાં રૂચિ જન્મી હતી. આર્યભટ્ટ વરાહ મિહિરના ગુરુ હતા. આર્યભટ્ટની જેમ વરાહ મિહિર પણ કહેતા હતા કે પૃથ્વી ગોળ છે.

મહર્ષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપના નામને કાયમી યશ મળે તેવી યોજના

આપ નીચેની કોઈપણ એક અથવા વધારે યોજનામાં, યોજના દીઠ રૂ. ૧૧૦૦૦-૦૦ (અગિયાર હજાર) રૂપિયાનો ફાળો આપી યશના ભાગી બની શકો છો

(૧) ભોજન સેવા તિથિ, (૨) યજ્ઞ સેવા તિથિ, (૩) ગૌ-સેવા તિથિ, (૪) ઔષધ સેવા તિથિ

આ માટે કોઈ એક અથવા વધારે યોજના મુજબ પ્રત્યેક યોજના માટે અગિયાર હજાર રૂપિયા દાનામાં આપો. આપ આપના પરિવારના જે તે સદસ્યની જે તે તિથિ (જન્મ, વિવાહ અથવા પુણ્ય તિથિ) લખાવશો તે તિથિએ આપના તરફથી સેવા થશે. સંસ્થામાં બોર્ડ પર નામ લખવામાં આવશે. તિથિ અગાઉં આપને જાણ કરવામાં આવશે.

આશા છે કે તિથિ દાન આપીને દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપનું નામ કાયમી રીતે યશસ્વી કરવાની આ અમુલ્ય તકનો લાભ ચોક્કસ ઉઠાવશો.

॥ओ३म्॥

टंकारा ऋषि बोधोत्सव पर यात्रा आयोजित

(16 फरवरी से 18 फरवरी 2015)

मान्यवर/मान्या, सादर नमस्ते।

ऋषि जन्मभूमि, टंकारा में आगामी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) पर आने जाने की सुविधा पूर्व यात्रा का आयोजिन। 13 फरवरी, 2015 दोपहर से 20 फरवरी 2015 दोपहर तक किया गया है। आपकी टंकारा यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो, यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। ध्यान रहे आप महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली की यात्रा करने जा रहे हैं, आप अपने त्याग, सहयोग, उत्साह को इस काल में बनाये रखें। यात्रा रेल द्वारा होगी। खान-पान, ठहरने का प्रबन्ध उचित करने का पूरा प्रयत्न होगा, फिर भी आपके मन के अनुकूल न हो, कहीं कमी का अनुभव हो तो चर्चा का विषय न बनायें।

वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर है, गाड़ी में रियायत लेने वाले मूल आयु प्रमाण-पत्र साथ रखें। टंकारा में मौसम थोड़ी सर्दी-गर्मी का होगा, लगभग यहाँ के अप्रैल-मई की तरह। अतः हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की साम्रगी, पीने का पानी और दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें। सामान उतना साथ लें जो आप स्वयं उठा सकें। अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें। कीमती सामान, धनराशि साथ न रखें। गर्म कपड़ों में आप स्वेटर, शॉल, ओढ़ने के लिए चद्दर साथ रखें। आर्य समाज सम्बन्धी धार्मिक भजन बोलने वाले भाई-बहन भजनों की कॉपी साथ रखें।

कार्यक्रम

- दिनांक 13 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)- हम DEL-Rajkot ऐक्सप्रैस (गाड़ी न. 19580) द्वारा रवाना होंगे। यह गाड़ी सराय रोहिला से 1.10 बजे दोपहर को चलकर दिल्ली कैण्ट होते हुए जाती है। आप स्टेशन पर आधा घण्टा पहले पहुँचने की व्यवस्था करें। दोपहर और रात्रि का भोजन साथ लायें।
- दिनांक 14 फरवरी 2015 (शनिवार)-प्रातः 11 बजे तक आप राजकोट स्टेशन पर पहुंच जायेंगे। सुबह का नाश्ता गाड़ी में करेंगे। दोपहर का भोजन टंकारा में होगा। राजकोट से टंकारा हम टैक्सी/वेन द्वारा जायेंगे जोकि लगभग 1.5 घण्टे का सफर है।
- दिनांक 15-18 फरवरी, 2015 (रविवार से बुधवार)- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जायेगा। इस दौरान आवास तथा भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा होगी।
- दिनांक 19 फरवरी, 2015 (बृहस्पतिवार)-टंकारा में प्रातः नाश्ता करके टैक्सी/वैन द्वारा राजकोट स्टेशन के लिए रवाना होंगे। राजकोट से राजकोट- DEE (गाड़ी न. 19579) द्वारा 12.15 बजे दोपहर को दिल्ली के लिए रवाना होंगे। दोपहर तथा रात्रि के भोजन आदि का प्रबन्ध गाड़ी में किया जाएगा। 20 फरवरी शुक्रवार को प्रातः का नाश्ता गाड़ी में होगा।
- दिनांक 20 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)-ईश्वर का धन्यवाद करते हुए दिल्ली कैण्ट होते हुए प्रातः 10.15 बजे सराय रोहिला पहुँच जायेंगे।

विशेषः- ध्यान रहे कि टंकारा में ठहरने तथा रेलगाड़ी की बुकिंग का प्रबन्ध पहले से कराना होगा, इसलिए आप अपने नाम और राशि कार्यक्रम शुरु होने के कम से कम 70 दिन पहले अवश्य जमा करा दें। अगर कोई भाई-बहन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पूर्व हमें सूचित कर दें। कम से कम कटौती के बाद उसकी राशि लौटा दी जायेगी।

अनुमानित व्ययः- 3-Tier AC: साधारण-3600/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक पुरुष-2600/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक महिला-2300/-रूपये। यह व्यय के No-Profit No-Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने-पीने, ठहरने, गाड़ी का किराया (3-Tier AC) आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 7 दिसम्बर 2014 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करा दें। रेलवे टिकट की बुकिंग में परेशानी को देखते हुए इच्छुक भाई-बहन अपनी राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी-बहुत तबदीली हो सकती है।

किसी कारण 3-Tier AC में सीट न मिलने पर II Sleeper में बुकिंग करवा दी जाएगी। किराये में जो अन्तर होगा उसे लौटा दिया जायेगा। जो भाई-बहन 2-Tier AC में जाना चाहें, सीट मिलने पर उनकी बुकिंग करा दी जायेगी। किराये में जो अन्तर होगा वह उनको देना होगा।

विशेषः दिल्ली कैण्ट स्टेशन पर सभी गड़ियाँ रूकती हैं। वही से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते हैं।

टंकारा प्रवास के दिनों में जो यात्री सोमनाथ जाना चाहे वह पूर्व सूचना देवें।

ऊषा अरोड़ा/रामचन्द अरोड़ा

सी-5 ए/216, जनकपुरी, नई दिल्ली, दूरभाषः 9910650690, 01125521814

(पृष्ठ 1 का शेष)

आदि के समूलोच्छेदन में इस वीर ने कमर कस ली। एतदर्थ समाज के विरोध विपक्षियों की ओर से सामाजिक बहिष्कार की धमकियों का साहस से सामना किया। ईसाइयत और इस्लाम द्वारा धर्मान्तरण और आर्यजाति पर होने वाले आक्रमणों का डटकर सम्मुख किया।

असीम साहस, अपूर्व लग्न, अनोखे त्याग, अटल निश्चय, अटूट इच्छा-शक्ति अनन्त धैर्य से आनेवाली बाधाओं का मुकाबला किया। धुन के पक्के मुंशीराम हर बात को तर्क की कसौटी पर कसते थे। विवेक से तुरन्त निर्णय करने की क्षमता उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता थी। विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी राह बना लेना उनका स्वभाव था। ऋषि द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरूद्धार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना उनके दृढ़ निश्चय और प्रबल इच्छा-शक्ति का प्रमाण है। हिमालय की शैवालिक की पहाड़ियों से घिरे कांगड़ी गांव के शान्त प्राकृतिक और सात्विक वातावरण में इस गुरुकुल के छात्रों धार्मिक भावना, देश-प्रेम, धर्मरक्षण, श्रद्धा, आत्म-विश्वास वैदिक सिद्धान्तों के प्रति आस्था कूट-कूटकर भरी जाती थी, इनमें भक्ति भावना, बलिदान का जज्बा भरपूर था। जोशीले, धर्मपरायण व्यक्तियों का दल तैयार करने का यह सर्वोत्तम साधन था। अंग्रेज सरकार के लिए यह खतरे की घंटी थी। आगे चलकर इस गुरुकुल ने राष्ट्रीय जागरण में महती भूमिका अदा की। कई वर्ष तक तो इस गुरुकुल पर अंग्रेजों की कोप-दृष्टि रही। उन्हें गुरुकुल की दीवारों के पीछे देशद्रोह की गन्ध आती थी। इस पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। इसे बागियों का अड्डा समझा जाता था। एक गुप्तचर रिपोर्ट में तो इसे सरकार के लिए शाश्वत खतरे का स्रोत और अज्ञात खतरे का मूल बताया गया। अधिकारियों का यहां ताँता लगा रहता था। 1916 में भारत के वायस राय तथा गवर्नर-जनरल लार्ड चैम्सफोर्ड गुरुकुल में पधारे वे अत्यन्त प्रभावित हुए। उसके बाद वक्र दृष्टि शान्त हुई और निरीक्षकों का ताँता खत्म हुआ। अब यह गुरुकुल राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्था (विश्वविद्यालय) बन गई। इसके बाद और भी कई स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किए गए। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली के निकट) खूब प्रगति पर है।

सर्वमेधयज्ञ-समाज सुधार और शिक्षा प्रसार हेतु अपना सारा जीवन तो समर्पित किया ही। सर्व हुतात्मा महात्मा मुंशी ने अपने दोनों पुत्रों को सबसे पहले गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश दिया, फिर अपनी प्रैस, समस्त अर्जित सम्पत्ति जालन्धर वाली कोठी भी गुरुकुल को दान कर दी। कन्याओं की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु जालन्धर का कन्या महाविद्यालय और देहरादून का कन्या गुरुकुल इनकी कीर्ति-पताका को बुलन्द किए हैं। इनके त्याग, तपस्या के भव्य स्मारक हैं। नारी जाति-उत्थान, अछूतोद्धार, दलितोत्थान में इनकी सेवाएं चिरस्मरणीय हैं। आगरा, भरतपूर, मथुरा के आस-पास पाँच लाख धर्मान्तरित मल्कान राजपूतों का गंगाजल से शुद्धिकरण करके बिछुड़े भाइयों का गले मिलाया। जिस गुरुकुल के लिए सर्वस्व अर्पित किया, अन्त में उसे भी छोड़ दिया और 1917 में संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द नाम पाया। धन्य है वह हरिद्वार की माया वाटिका जिसमें संन्यास लेकर अब यह मानव-मात्र की सेवा-हेतु समर्पित हो गए, इनकी सेवा की प्रवाह धारा राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरी। पूरा देश इनका कार्य क्षेत्र बन गया। अब सारा संसार इनका परिवार था। 1918 में गढ़वाल में अकाल पीड़ितों की सेवा-सहायता में जुटे। 1918 में ही इनका राजनीति में प्रवेश हुआ, जो एक क्रान्तिकारी घटना सिद्ध हुई। रोलट ऐक्ट के विरोध में 30 मार्च 1919 में चालीस हजार सत्याग्रही विशाल जन समूह का नेतृत्व भगवाधारी इस आर्य नेता ने किया। इनकी हुंकार सिंह गर्जना-''निर्दोषों का खून बहाने से पहले मेरे सीने में गोली मारो ''सुनकर गोरखा सैनिकों की संगीने झुक गई, दिल्ली टाऊन हाल के मैदान में गोलियों के सामने तथा सीना देखकर इस वीरता, निर्भीकता पर कौन मुग्ध न हुआ होगा? उस समय दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द की धाक थी, महात्मा गाधी डॉ. अन्सारी और अजमल खान स्वामी जी की आवाज को बहुत महत्व देते थे। 4 अप्रैल 1919 में जामा मस्जिद की वेदी (मिम्बर) पर पहले और अन्तिम गैर-मुस्लिम नेता के रूप में वेद-मन्त्रों की ध्वनि प्रतिगंजित की हिन्दू मुस्लिम एकता का सन्देश दिया। इससे ये अजात शत्रु बन गए मानव से महामानव बन गए। वे सच्चे अर्थों में पन्थ निरपेक्ष थे, राष्ट्रीय एकता के सबल प्रतीक थे। जालियां वाला बाग के नर-संहार के कारण क्षत-विक्षत पंजाब में सन् 1919 दिसम्बर में कांग्रेस के अधिवेशन का सफल संचालन करके पंजाब के लोगों का मनोबल बढ़ाया। उनमें आशा की जीवन ज्योति जगाई, वीरता की दीपशिक्षा पज्जवलित की। हिन्दी में दिया गया स्वागत भाषण उनकी सच्चाई उच्चता, सत्यप्रियता, वीरता और निर्भीकता का नमूना था।

1922 में अमृतसर में अकाल तख्त पर सिक्खों की मांगों के समर्थन में (गुरु का बाग के सम्बन्ध में) दिया गया भाषण और परिणाम स्वरूप रावल-पिण्डी जेल में रहना उनके साहस, सौहार्द और राष्ट्रीय एकता का ज्वलन्त उहारण है। 1924 में महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी का भव्य समारोह स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में सफलतापूर्वक मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन को स्वस्थ मोड़ देने में तीन प्रमुख तत्व हैं- (1) महर्षि दयानन्द का बरेली में 1879 में साक्षात्कार और मुंशीराम को दिए गए प्रवचन उपदेश (2) पत्नी श्रीमती शिवदेवी की प्रतिनिष्ठा, अनूठी सेवा और आर्य संस्कृति के प्रति उनकी आस्था। (3) 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययननानुशीलन और उस पर आचरण।

महात्मा गांधी स्वामी जी को अपना बड़ा भाई मानते थे, उनके शब्दों में-''स्वामी श्रद्धानन्द कर्मवीर थे। श्रद्धा, सत्य और वीरता के प्रतीक थे। रैम्जे मैक्डानल जो बाद में ब्रिटिश गवर्मेन्ट के प्रधानमन्त्री बने, ने गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी जी से भेंट की थी। इंग्लैण्ड वापिस जाने पर कहा था-''यदि वर्तमान काल को कोई कलाकार ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति महात्मा मुंशीराम की तरफ इशारा करूंगा। कोई मध्यकालीन चित्रकार पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं इस जीवित मूर्ति के दर्शन की प्रेरणा करूंगा।''

23 दिसम्बर 1926 का मनहूस दिन-साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जीवन-भर लड़ने वाला सेनानी, मानवता का रखवाला, साम्प्रदायिक उन्माद का निवाला बन गया। एक मदान्ध पर मजहबी जनून सवार हुआ। रूग्णशय्या पर पड़े स्वामी श्रद्धानन्द का सीना गोलियों से छलनी कर दिया। गाँधी जी के शब्दों में शानदार जीवन का शानदार अन्त हुआ। चारों ओर घृणा भय और आतंक का अन्धकार छा गया सचमुच इतिहास में वह दिन पीड़ा और क्षोभ का था। भारत रोया, दिल्ली रोई, दिल्ली की गलियां रोई, कूचे रोए। 25 दिसम्बर 1926 को विशाल जुलूस निकला-विशाल जनसमूह बड़े-बड़े सम्राटों को रिझाने वाला/मीलों तक नरमुंह-नरमुंड ही दिखाई देते थे। लाहौरी गेट से आरम्भ हुई यात्रा चाँदनी

समर्पित सिपाही-स्वामी श्रद्धानन्द

चौक के प्रमुख मार्गों से होती हुई दोपहर बाद यमुना नदी के किनारे पहुंची। अपने हृदय सम्राट के नश्वर शरीर को अग्नि के सुपुर्द करके जन-समूह अपने घरों को इस तरह लौटा जैसे उनका सर्वस्व लुट गया हो। फिजां में शायर के शब्द गूँज रहे थे- **''मौत ऐसी हो नसीबों में तो क्या रखा है जीवन में।'' और ''ऐ मौत! अगर आकर खामोश कर गई तू, सदियों दिलों के अन्दर हम गूंजते रहेंगे।'' लाला लाजपत राय इस तरह फूट पड़े- ''श्रद्धानन्द। तुमने मुझे शिकस्त दे दी। मेरे नसीब में ऐसी मौत कहाँ?** सचमुच आज आर्य समाज ही नहीं, सारा भारत सूना और असहाय हो गया है।'' सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान सदियों तक देशवासियों के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति का स्रोत बना रहेगा।

हम प्रतिवर्ष स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान-दिवस मनाते हैं जोश और जज्बे के साथ। एक ज्वलन्त प्रश्न हमारे सामने है-क्या हम जलसे-जुलूस तक ही सीमित रहेंगे? क्या आज परिस्थितियां बदली हैं? आज की मानवता की छाती पर दानवता का नर्तन हो रहा है। आज भी धर्मोन्माद की आग को निर्दोषों के खून से बुझाया जा रहा है। आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद के रूप में हिंसा, घृणा, वैमनस्य से वातावरण विषक्त हो रहा है। यह आग बड़बानल, दावानल के रूप में फैले उससे पहले ही इसे नेस्तानाबूद करना होगा, खेद है राजनीति के सौदागर पन्थ-निरपेक्षता, तुष्टीकरण, राज नैतिक विडम्बना के कारण राष्ट्रीय अस्मिता का सौदा कर रहे हैं। धर्मान्तारण का चक्र अब भी जारी है। षडयन्त्र अब भी पल रहे हैं, कुचक्र अब भी चल रहे हैं। हमारी आँख कब खुलेगी? जिन मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों के लिए स्वामी जीने बलिदान दिया, उनकी रक्षा से हम कब तक किनारा काशी करते रहेंगे?

दे रहा है आदमी का दर्द अब आवाज दर-दर
अब न सम्भले तो कहो, सारा जमाना क्या कहेगा?
जब बहारों को खड़ा नीलाम पतझड़ कर रहा है,
हम नहीं फिर भी जगे तो अशियाना क्या कहेगा?

- ए-15/बी नेहरू ग्राउंड, न्यू टाऊन (एन.जे.टी.), फरीदाबाद-121001, मो. 9312558420

(पृष्ठ 8 का शेष)

इसी प्रकार चोरी को भी बुरा बतलाया गया है। अत: अथर्ववेद में कहा गया है कि-**येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुर्व्राजमत्रिणः।**

अग्निस्तुरीयां यातुह्य सो अस्मभ्यमधि ब्रवत्॥

अर्थात् जो मुफ्तखोरे, भूखे और भटकने वाले रात्रि में बस्ती के भीतर चोरी करने और डाका डालने के लिए आते हैं, उनसे बचने के लिए राजपुरुष सबको सचेत करता है और उन्हें पकड़कर मार डालता है। इसीलिए कभी भी किसी की चोरी नहीं करनी चाहिए।

वास्तव में यह सत्य प्रतीत होता है कि हम यदि वेद के द्वारा निर्दिष्ट मार्गों का अनुसरण करें तो निश्चित ही आज समाज में फैली बुराइयाँ समाप्त हो जायेंगी। इसीलिए हम सबको वेदों की प्रासंगिकता को समझते हुए 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' की भावना से ओत-प्रोत होते हुए वेद के द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

वेदों की श्रेष्ठता के बारे में श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी कहते हैं कि-

वेद-वेद के मन्त्र मन्त्र में,
मन्त्र मन्त्र की पंक्ति-पंक्ति में।
पंक्ति-पंक्ति के अक्षर स्वर में,
दिव्य ज्ञान आलोक प्रदीप्त॥

आर्यो! वेदनिधि को पहचान कर स्वयं को वेदानुकूल बनावें और दूसरों को भी वेद मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश देवें।

- श्रीमद् दयानन्दार्ष-जयोतिर्मठ-गुरुकुल, दून-वाटिका-2, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)-248007

चुनाव समाचार

आर्य समाज काकडवाडी, मुम्बई

प्रधान- श्री देशबन्धु शर्मा **मन्त्री-** श्री विजय गौतम

कोषाध्यक्ष- श्री किशनलाल महाजन

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव, हरियाणा

प्रधान- श्री मा. सोमनाथ आर्य **मन्त्री-** श्री प्रभुदयाल चुटानी

कोषाध्यक्ष- श्री नरवीर लाल चौधरी

असहायों की माता प्रेमलता शास्त्री जी नहीं रहीं

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्री माता प्रेमलता शास्त्री जी का दिनांक 1 नवम्बर, 2014 की रात्रि को आकस्मिक निधन हो गया है। वे लगभग 85 वर्ष की थी। माता जी लगभग 25 वर्ष से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से देश के पूर्वोत्तर आसाम, नागालैण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में महर्शि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार गुरुकुल, शिक्षण संस्थाएँ एवं बालवाड़ियों की स्थापना करके बेसहारा आदिवासी बच्चों को निरन्तर शिक्षित शिक्षित करने का कार्य कर रही थीं, माता जी के निधन का समाचार सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री विनय आर्य मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा जी ने उन्हें एक कर्मठ कार्यकर्ता बताते हुए कहा कि उन्होंने पिछड़े एवम समाज की मुख्यधारा से कटे हुए बच्चों की सेवा तथा उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध करने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। टंकारा परिवार की ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें। दयानन्द संघ से जुड़े हुए अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को माता जी के छोड़े हुए कार्य को पूर्ववत सचालित करने की शक्ति प्रदान करें, यही हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी

उनकी स्मृति में 4 नवम्बर, 2014 को पश्चिमी पंजाबी बाग के बगीची सभागार में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन आर्य समाज रानीबाग के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर ने किया।

इस अवसर पर डॉ. महेश वेदालंकार, स्वामी प्रणवानन्द, डॉ. योगानन्द शास्त्री, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, महाशय धर्मपाल आर्य, माता ईश्वर रानी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वामी दुग्धाहारी तथा माता जी के दत्तक पुत्र श्री विनोद जी ने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके चमत्कारी कर्मठ व्यक्तित्व तथा उनके कार्यो पर प्रकाश डाला।

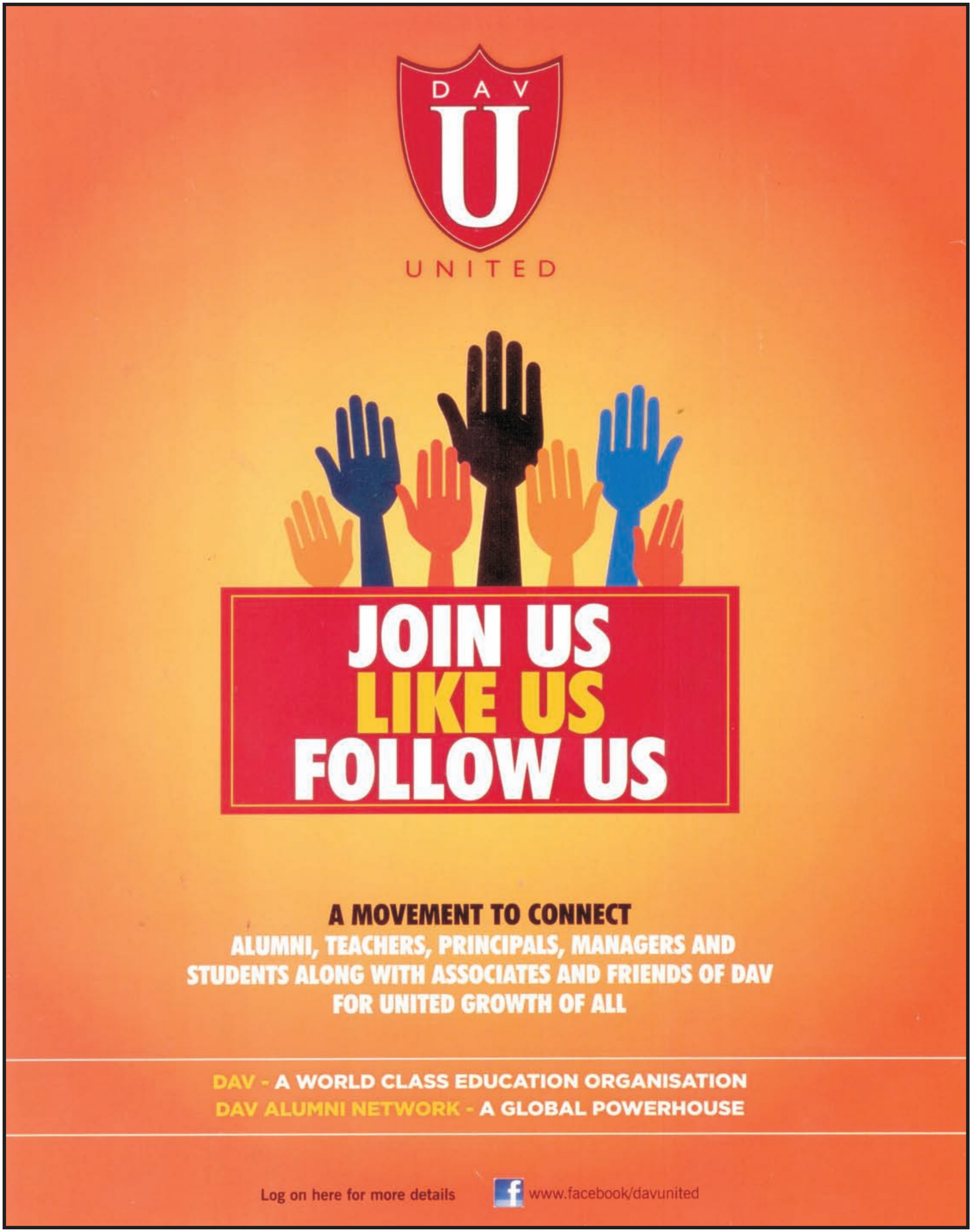

DAV
U
UNITED
JOIN US
LIKE US
FOLLOW US
A MOVEMENT TO CONNECT
ALUMNI, TEACHERS, PRINCIPALS, MANAGERS AND
STUDENTS ALONG WITH ASSOCIATES AND FRIENDS OF DAV
FOR UNITED GROWTH OF ALL
DAV - A WORLD CLASS EDUCATION ORGANISATION
DAV ALUMNI NETWORK - A GLOBAL POWERHOUSE
Log on here for more details
www.facebook/davunited

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है, जीवन नाम है - सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का .... प्रेमचंद

टंकारा समाचार दिसम्बर, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-12-2014
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.11.2014

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट- 363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 16, 17, 18 फरवरी 2015 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 11 फरवरी 2015 से 17 फरवरी 2015 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर), श्री कुलदीप शास्त्री सहपत्नीक (बिजनौर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

दिनांक 17.02.2015 मंगलवार

मुख्य अतिथि: गुजरात के राज्यपाल-महामहिम श्री ओमप्रकाश कोहली जी

विशिष्ट अतिथि: श्री एच आर गन्धार

(प्रशासक एवम् सलाहकार डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान् :

श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल-अध्यक्ष श्रद्धांजलि सभा, दिनांक 17.02.2015 (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात), **स्वामी आर्येशानन्द जी** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द जी** (भुज गुजरात), **डॉ. विनय विद्यालंकार** (एसोसियेट प्रो./अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री बामनभाई मेटालिया** (स्थानीय विधायक), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मौरबी), **श्री एस के शर्मा** (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवाने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें (15 जनवरी 2015 तक), जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्या	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय